युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 8 अंक 37 12 से 18 सितम्बर, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 भा. शु.-07

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने मुजफ्फरनगर की अमानवीय हिंसा पर आम नागरिकों से शान्ति व भाई-चारा बनाये रखने की अपील की

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा सर्वधर्म संसद के संस्थापक संयोजक स्वामी अग्निवेश जी ने दिनांक 12 सितम्बर, 2013 को सभी सम्प्रदाय व धर्मों के लोगों का आह्वान किया कि कोई भी किसी भी अराजक तत्वों व राजनैतिक व्यक्तियों के बहकावे में न आए। यह समय की मांग है कि शान्ति व साम्प्रदायिक सद्भाव बनाने में एक दूसरे के हितों का ध्यान रखें व भाई चारा बनाए रखने में ही सब की भलाई है।

स्वामी जी ने कहा कि आई.बी. ने पन्द्रह दिन पहले राज्य सरकार को चेतावनी दी थी उसके बावजूद दंगों व जान माल की क्षति को रोकने में अखिलेश सरकार पूर्णतया विफल रही है। मुजफ्फरनगर व आस-पास के देहातों में विगत कई दिनों से माहौल साम्प्रदायिक हो रहा था। आपसी छेड़खानी से शुरू हुई एक छोटी सी वारदात देखते ही देखते कितनी विकराल हो गई किन्तु राज्य सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। अपने निहित राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति 'के लिए सपा, भाजपा, कांग्रेस एवं बसपा घुल मिल कर इतनी भयावह स्थिति में भी अपनी साम्प्रदायिक रोटियाँ सेकते रहे और मज़बूर लाचार भोली भाली जनता पिसती रही।

स्वामी जी ने कहा कि मैं कड़े शब्दों में उन सभी नेताओं की भर्त्सना करता हूँ जिन्होंने साम्प्रदायिक सभाओं में दूसरे समुदायों के लिए विशाक्त व भड़काऊ भाषण दिए। साथ ही साथ जिस प्रकार पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अवैध शस्त्रों का जो व्यापार फल फूल रहा है वो चिन्ता का विषय है। कोई भी सरकार हो स्थिति को सम्भालने में कोई रुचि न लेकर उसने आज शान्ति व्यवस्था की जो धज्जियाँ उड़ाई हैं वह शोचनीय है। उन्होंने कहा कि यह वही सरकार है जो दुर्गा शक्ति नागपाल को बर्खास्त करने में महज 40 मिनट लगाती है लेकिन यहाँ अपने निहित स्वार्थों के लिए मौन धारण कर लेती है उसे तो नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए स्वयं त्याग पत्र दे देना चाहिए।

स्वामी जी ने गहरा रोश प्रकट करते हुए कहा कि मैं केन्द्र सरकार से भी माँग करता हूँ कि तुरन्त हस्तक्षेप करते हुए राज्य सरकार को बर्खास्त करें एवं राष्ट्रपति शासन लगाए। वहाँ के निवासियों से अपील है कि शान्ति व भाई चारा बनाए रखें।

स्वामी अग्निवेश जी के प्रयासों से मजदूर कालोनी का नामकरण महर्षि दयानन्द जी के नाम पर किया गया

ग्रीन फील्ड : सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद हरियाणा सरकार की ओर से ग्रीन फील्ड कॉलोनी में मजदूरों के लिए बनाई जा रही कॉलोनी का बुधवार को महर्षि दयानन्द के नाम पर नामकरण किया गया। इनसे खानों में बंधुआ मजदूरों की तरह काम लिया जाता था। इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा फरीदाबाद की ओर से कॉलोनी के कम्यूनिटी सेन्टर में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मोर्चा के सर्वेसर्वा स्वामी अग्निवेश जी, हरियाणा के श्रम राज्य मंत्री शिवचरण लाल शर्मा और बंधुआ मुक्ति मोर्चा फरीदाबाद के प्रधान मायाराम सूर्यवंशी ने यहां तिरंगा झंडा फहराकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत किया। हरियाणा सरकार की ओर से यहाँ करीब 6 एकड़ जमीन पर मजदूरों के लिए 525 मकान बनाए जा रहे हैं। स्वामी अग्निवेश जी ने हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा का भी धन्यवाद किया और बताया कि सरकार ने मजदूरों के लिए मकान बनाने के लिए 8 करोड़ रुपये पास कर दिये हैं। अब इन मकानों का निर्माण कार्य जल्द शुरू हो जायेगा।

ज्ञातव्य हो कि आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी के नेतृत्व में संचालित बंधुआ मुक्ति मोर्चा देशभर में 1,76,000 से भी अधिक बंधुआ एवं बाल मजदूरों को मुक्ति व पुनर्वास की राह प्रदान कर चुका है। खदानों में कार्य कर रहे लोगों से बंधुआ मजदूरों की तरह काम लिया जाता है। स्वामी अग्निवेश जी के प्रयासों से निरन्तर बंधुआ मजदूरों की मुक्ति तथा उनके पुनर्वास की राह प्रदान की जा रही है।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर और अन्धविश्वास

- डॉ. विवेक आर्य

स्व. डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर जी की हत्या किया जाना निश्चित रूप से कायरता का प्रतीक है और हम इसकी खुले रूप से भर्त्सना करते हैं। श्री दाभोलकर अन्धविश्वास उन्मूलन के लिए राज्य सरकार द्वारा कानून बनवाने के लिए पिछले 15 वर्षों से प्रयासरत थे। आप एक ऐसा कानून बनवाना चाहते थे जिससे जादू-टोना, भस्म-भभूत, चमत्कारी शक्तियाँ, अवतारवाद के नाम पर धोखा, ऊपरी छाया, अघोरी द्वारा तंत्र-मंत्र करना, पुत्र प्राप्ति के लिए अनुष्ठान, अभिमंत्रित नगीने, पत्थर आदि भूत-प्रेतादि का मनुष्य के शरीर में प्रवेश, पशुबलि, नरबलि, जादूगरी, कुत्ता काटे, साँप काटे का ईलाज, नामर्दगी और बांझपन का इलाज आदि कानूनी रूप से न केवल वर्जित हो अपितु दण्डनीय भी हो।

ऊपर से देखने में सभ्य समाज आपको बड़ा बुद्धिजीवी और प्रगतिशील मानकर आपकी इस कार्य में प्रशंसा अवश्य करेगा और आपका इस कार्य में साथ अवश्य देना चाहेगा परन्तु सत्य कुछ और भी है।

डॉ. नरेन्द्र ने इस कानून के साथ-साथ कुछ अन्य कार्यों का भी विरोध किया है जैसे होली के पर्व पर आसाराम बापू द्वारा चंद टैंकर पानी को रंग मिला कर इस्तेमाल करना जबकि उस समय महाराष्ट्र में सूखा पड़ा था। जैसे गणपति उत्सव के समय समुद्र में गणेश की मूर्तियों को विसर्जन करने में पर्यावरण को नुकसान होने की बात कहना।

पाठक अभी तक सोच रहे होंगे की ऐसे व्यक्ति का तो अवश्य साथ देना चाहिए मगर यहाँ आप और भी कुछ नहीं देख पा रहे हैं।

अन्धविश्वास केवल हिन्दू समाज की मिलकियत नहीं है, संसार का ऐसा कोई भी मत नहीं होगा जिसमें अन्धविश्वास किसी न किसी रूप में नहीं मिलता है। जैसे -

1. बकराईद के अवसर पर लाखों निरपराध पशुओं को बेवजह मारा जाता है जिससे पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान होता है। डॉ. दाभोलकर चूंकि यह मामला मुस्लिम समाज से सम्बन्धित था चुप क्यूँ रहे। क्या यह मामला अन्धविश्वास से सम्बन्धित नहीं था?

2. क्या केवल प्रदूषण गणपति उत्सव पर ही होता है जो कि वर्ष में एक दिन के लिए बनता है जबकि हर रोज लाखों निरीह पशुओं को माँस के लिए बूचड़खानों में नहीं मारा जाता है, उनको मारने के लिए कसाई खानों में लाखों लीटर पानी इस्तेमाल होता है, उससे होने वाला प्रदूषण क्या प्रदूषण नहीं है?या फिर यह भी मुसलमानों से सम्बन्धित होने के कारण त्याज्य है।

3. जितनी भी मुसलमानों की दरगाहें, मजारे, कब्रें आदि हैं, वहाँ पर अन्धविश्वास प्रचलित हैं कि मरे हुए मुर्दे में बिमारियों को ठीक करने की परीक्षा में अंकों की, बेरोजगारों को नौकरी की, बेऔलादों को औलाद मिलती हैं। फिर डॉ. नरेन्द्र जी ने भारत देशभर में फैली हजारों कब्रों को उखाड़ने के लिए किसी भी कानून को बनाने के लिए क्यूँ प्रयास नहीं किया?क्या कब्र पूजा अन्धविश्वास नहीं हैं?

4. ईसाई समाज प्रार्थना से चंगाई होना मानता है अर्थात् किसी भी प्रकार की बीमारी हो आपको डॉक्टर, दवाई आदि की आवश्यकता नहीं है। आप चर्च जायें, प्रभु ईसा मसीह की पूजा करें, उनपर विश्वास लायें आप चंगे हो जायेंगे। जीवन भर बीमार रहने वाली सिस्टर अलफोंसो, अपने जीवन में पार्किन्सन रोग के कारण व्हील चेयर पर अपने अंतिम वर्ष बिताने वाले पूर्व पोप जॉन पॉल द्वितीय, स्वास्थ्य कारणों के कारण अपने कार्यकाल के पूरा होने से पहले अपना त्यागपत्र देने वाले पूर्व पोप बेनेडिक्ट, जीवन में तीन बार अपनी शल्य चिकित्सा करवाने वाली विश्व विख्यात मदर टेरेसा सभी ईसा मसीह पर विश्वास लाते थे मगर दुआ से ज्यादा दवा पर भरोसा करते थे फिर भी ईसाई समाज प्रार्थना से चंगाई जैसे अन्धविश्वास को प्रोत्साहन दे रहा है। डॉ. नरेन्द्र जी कभी ईसाई समाज के इस अन्धविश्वास के विरूद्ध नहीं बोले क्यूँ?ऐसे अनेक उदाहरण हम सभी मतों में से दे सकते हैं। मगर हमारा उद्देश्य यहाँ पर मतों की निन्दा करना नहीं है। अपितु यह सन्देश देना है कि धर्म और अन्धविश्वास में अंतर समझना बेहद आवश्यक है और अन्धविश्वास की तिलांजलि देने के लिए धर्म की तिलांजलि देना आवश्यक नहीं है जैसा डॉ. नरेन्द्र जी ने अपने जीवन में किया था।

डॉ. नरेन्द्र जी की अन्धविश्वास विवेचना का समर्थन करने से व्यक्ति नास्तिक बन जाता है जो स्वयं एक प्रकार का अन्धविश्वास है। आस्तिक व्यक्ति अपने से शक्तिशाली ईश्वर की सत्ता को मानने के कारण पाप कर्म को जान बूझकर नहीं करता और अगर करता भी है तो अज्ञानता के कारण जबकि नास्तिक व्यक्ति के लिए केवल भोगवाद ही जीवन का उद्देश्य रह जाता है इसलिए भोगवाद के गर्त में पड़कर वह एक से बढ़कर एक पाप कर्म करता है।

धर्म और अन्धविश्वास में अंतर को समझना आवश्यक है। जब मनुष्य ईश्वर के अनुसार अपने कार्यों को करता है तब वह धर्म का पालन कर रहा होता है और जब मनुष्य अपने अनुसार ईश्वर के कार्यों का निर्धारण करने लगता है तब वह धर्म के स्थान पर अन्धविश्वास का पालन करने लगता है।

जिन-जिन अंधविश्वासों का ऊपर वर्णन किया गया है या तो वे मनुष्य की अल्पबुद्धि की देन हैं अथवा ईश्वर की आज्ञा का गलत अनुसरण है।

जैसे वेदों में पशुओं के साथ भी मित्रों के समान व्यवहार करने का सन्देश है फिर यह कैसे हो सकता है कि वेदों में यज्ञ में पशुबलि का विधान हो।

जैसे कुरान में अल्लाह को रहीम अर्थात् दयालु बताया गया है फिर यह कैसे हो सकता है कि वही अल्लाह अपनी इच्छा के लिए ईद के अवसर पर लाखों पशुओं की मृत्यु का कारण बने।

यह सब गड़बड़ ईश्वर द्वारा नहीं अपितु मनुष्य द्वारा की गई है।

इसका समाधान भी वही है जो महात्मा ज्योतिबा फूले और महागोविन्द रानाडे के मार्गदर्शक डॉ अम्बेडकर से आधी सदी पहले अन्धविश्वास और जातिवाद के विरूद्ध उद्घोष करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती ने किया था।

स्वामी दयानन्द ने न केवल पाखण्ड के, अन्धविश्वास के विरूद्ध उद्घोष किया अपितु वेदों में वर्णित सच्चे परमेश्वर की परिभाषा को समाज के कल्याण के लिए पुनः स्थापित कर समाज को सच्चा आस्तिक भी बनाया था। उनका उद्देश्य मत-मतान्तर के भेदभाव को मिटाकर धर्म की पुनः स्थापना था।

धर्म की परिभाषा उन्होंने धार्मिक कृत्य न बताकर धैर्य, क्षमा, मन को प्राकृतिक प्रलोभनों में फँसने से रोकना, चोरी त्याग, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि अथवा ज्ञान, विद्या, सत्य और अक्रोध धर्म के दस लक्षण के रूप में बताया था।

मनुष्य के आचरण को सर्वोपरि बताते हुए उन्होंने कहा कि जो पक्षपात रहित न्याय सत्य का ग्रहण, असत्य का सर्वथा परित्याग रूप आचार हैं उसी का नाम धर्म और उससे विपरीत का अधर्म है। धर्म की इस परिभाषा को संसार का कोई भी तटस्थ व्यक्ति अस्वीकार नहीं कर सकता फिर हमें अन्धविश्वास के परित्याग के लिए नास्तिक बनने की क्या आवश्यकता है।

e-mail : drvivekarya@yahoo.com

आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद के पूर्व प्रधान, आर्य लेखक, हरियाणा साहित्य अकादमी के सदस्य श्री नरेन्द्र आहूजा विवेक को मातृशोक

श्री नरेन्द्र भूषण आहूजा विवेक की माता श्रीमती शान्ति देवी का 78 वर्ष की आयु में गत 29 अगस्त को सर गंगाराम अस्पताल दिल्ली में निधन हो गया। आर्य संस्कारों से ओत-प्रोत माता श्रीमती शान्तिदेवी की श्रद्धांजलि सभा सामुदायिक केन्द्र गुलाबी बाग दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। प्रेरणा सभा को आचार्य सत्यवीर शास्त्री दिल्ली, स्वामी श्रद्धानन्द जी पलवल, स्वामी आर्यवेश जी दिल्ली तथा श्री कन्हैयालाल आर्य प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव ने संबोधित किया। इस अवसर पर मंच संचालन करते हुए श्री ओमप्रकाश आर्य ने परिवार का परिचय दिया तथा नेत्रदान और आर्य समाज में परिवार के योगदान की चर्चा की। आचार्य सत्यवीर शास्त्री ने माता शब्द की व्याख्या तथा मां के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसे एक भारी क्षति बतलाया। स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वर्गीया माता को सदैव अपनी स्मृति में जीवित रखने और माता के बताये आर्य वैदिक सिद्धांतों पर चलने का संकल्प दिलाया।

स्वामी आर्यवेश जी ने नरेन्द्र आहूजा विवेक पर माता के दिए संस्कारों की चर्चा की और उनके द्वारा किए गए आर्य सिद्धांतों के प्रचार की प्रशंसा की। कन्हैयालाल आर्य जी ने इस अवसर स्व. मास्टर लछमनदास आहूजा के कार्यों को याद किया और परिवार को सदा उनके बताये आर्य सिद्धांतों के मार्ग पर चलने का आहवान किया। ओमप्रकाश आर्य ने गुड़गांव में निरामया ट्रस्ट के माधयम से चलाये जा रहे नेत्रदान के कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर श्रीमती बिमला ग्रोवर प्रधाना आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, श्री सत्यभूषण आर्य, श्री धानेश अधालक्खा पार्षद फरीदाबाद एवं उपाध्यक्ष फार्मेसी कौंसिल हरियाणा, योगेश ढींगरा पार्षद फरीदाबाद, श्री बी. बी. सिंघल पूर्व उपाध्यक्ष नगरनिगम पंचकूला, श्री महेन्द्र नागपाल नेता सदन उत्तरी दिल्ली नगर निगम एवं अन्य अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। अनेकों सामाजिक संस्थाओं एवं राजकीय संस्थाओं की ओर से अनेकों शोक प्रस्ताव प्राप्त हुए।

मेरा लक्ष्य क्या है?

जो मत मतान्तर के परस्पर विरूद्ध झगड़े हैं, उनको मैं पसन्द नहीं करता। क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फंसा के परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट, सर्व सत्य का प्रचार कर, सबको एक्य मत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीति युक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुँचाने के लिए मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है। – महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैज्ञानिक युग में - अवैज्ञानिक मान्यताएँ

- अर्जुनदेव स्नातक

आज विज्ञान का युग है। सृष्टि के अज्ञात रहस्यों का नियमित, व्यवस्थित, बुद्धिगम्य अन्वेषण का नाम विज्ञान है। इस वैज्ञानिक युग में प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा अन्वेषित तथ्यों की कतिपय वैज्ञानिक साधनों द्वारा परीक्षा की, उन तथ्यों को सत्य एवं विज्ञान सम्मत प्राप्त किया। निश्चय से सत्य की कसौटी पर परीक्षित ऋषि-मुनियों द्वारा वर्णित सृष्टि के नियम, वैज्ञानिक नियम कहलाते हैं। ऋषि-मुनियों द्वारा अन्वेषित तथ्यों का आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद रहा है। आधुनिक युग के निर्माता स्वामी दयानन्द ने समस्त विश्व को विज्ञान सम्मत वेद मार्ग पर चलने का आह्वान करते हुए आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने आर्य समाज की प्रगति के लिए विश्व के समस्त मानवों के कल्याण के लिए प्रमुखतया दस नियम निर्धारित किये। उनमें सबसे पहला नियम है -

''सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।''

आश्चर्य यह है कि संसार में सत्य एवं ऋत नियमों (अपरिवर्तनीय नियमों) के रहते हुए भी हम बुद्धिहीन अज्ञान से परिपूर्ण अन्धविश्वासों वाली अवैज्ञानिक मान्यताओं को पूर्ण विश्वास के साथ अपनाये हुए हैं। आचार्य रजनीश ने एक पुस्तक में लिखा है -

''अतीत का अन्धविश्वास से भरा ज्ञान विकासशील मस्तिष्क के लिए जंजीर बन जाता है।''

रजनीश के इस विचार का प्रत्यक्ष वर्तमान में अनेक पढ़े लिखे विज्ञानवेताओं में प्राप्त होता है। जिसने भूगोल विषय में एम. ए. पी. एच. डी. की है वह विद्यालय में छात्रों को विज्ञान के आधार पर पढ़ाता है कि जो स्वयं प्रकाशित होते हैं उनकी संज्ञा नक्षत्र है। इस आधार पर सूर्य नक्षत्र है। चन्द्रमा पृथिवी का चक्कर काटने से उपग्रह है। यह ज्ञान विद्यार्थियों को देता है। घर आकर वही अध्यापक कक्षा आठ, दस पास पंडित के यह कहने से आप पर सूर्य ग्रह का प्रकोप है, चन्द्र ग्रह भी आपके लिए अशुभ करने वाला है - उस समय सूर्य नक्षत्र है तथा चन्द्र उपग्रह है, इस बात को भूल जाता है तथा सामान्य पढ़े लिखे के कथनानुसार ग्रहों की शान्ति के लिए अनुष्ठान कराता है। यह कृत्य सर्वथा अवैज्ञानिक है। अन्य अनेक अवैज्ञानिक मान्यताएँ इस समाज में अर्थात् समस्त विश्व में व्याप्त है। आइये, संक्षेप में उन पर विचार करते हैं :-

गंगा स्नान, तीर्थ-भ्रमण, अस्थि प्रवाह

अनेक लोगों की मान्यता है कि गंगा स्नान से कृत पाप नष्ट होते हैं, यही विचार तीर्थों में भ्रमण करने से माना जाता है। मृत्यु के बाद नदी विशेष में अस्थि प्रवाह करने से मृत आत्मा को मोक्ष प्राप्त होता है। तीर्थ यात्रा करने से पुण्य होता है, सारे पाप नष्ट होते हैं। क्या उक्त बातें विज्ञान सम्मत हैं?

प्रथम गंगा स्नान तथा अस्थि प्रवाह पर विचार करते हैं। जल शरीरादि को स्वच्छ करता है, मन की मलिनता को नहीं। फिर हम यह भी देखते हैं कि किये हुए कर्म कभी समाप्त नहीं होते हैं, उनका फल अवश्य मिलता है। थोड़ा विचार करें गलती से बबूल के बीज बोये अब उस पर कितना ही गंगाजल डालें, प्रार्थना करें, विशेष अनुष्ठान करें क्या बबूल के स्थान पर आम लगेंगे, आम का वृक्ष उगेगा?यह कभी संभव नहीं है फिर नदी विशेष में स्नान करने से पाप नष्ट होते हैं, यह मान्यता तथा तीर्थादि भ्रमण से पाप नष्ट होते हैं, यह मान्यता अवैज्ञानिक है। कबीर ने लिखा है -

तीरथ चाले दोउ जना चित्त चंचल मन चोर।
एकौ पाप न उतारिया दस मन लाये और।।

कैसी आश्चर्य की बात कि सबको पवित्र करने वाली गंगा को पवित्र करने की चिन्ता तथाकथित साधुओं को हो रही है। वे साधु गंगा जल पीकर पवित्र होने का उपदेश औरों को देते हैं तथा स्वयं क्या करते हैं :-

स्वयं कुम्भादि मेलों पर बिसलरी का पानी पीते हैं। थोड़ा विचार करें मोक्ष किसे कब मिलता है - उपदेश में सभी कहते है। सत्कर्म निष्काम कर्म मोक्ष देते हैं फिर अस्थि जिसमें आत्मा नहीं है गंगादि में डालने से मोक्ष कैसे प्राप्त करेगी। सत्य तो यह है कि उक्त मान्यता अवैज्ञानिक है।

फलितज्योतिष ग्रह शान्ति शुभ-अशुभ मुहूर्त।

ज्योतिष में गणित ज्योतिष तो सृष्टि के ऋत नियमों के आधार पर होने से सत्य है। ग्रहण कब कहाँ होगा, सूर्योदय-सूर्यास्त किस दिन कब होगा आदि ज्ञान-विज्ञान सम्मत होने से सत्य है। फलित ज्योतिष अमुक राशिवाला सुखी या दुखी होगा पूर्णतया असत्य है। सुख-दुख कर्मानुसार तथा मनकी अनुकूलता तथा प्रतिकूलता पर आधारित है। ज्योतिषियों को हाथ दिखाकर भविष्य फल जानना, अमुक शुभ या अशुभ मुहूर्त है आदि बातें सारी अवैज्ञानिक हैं। राशि के ञ, ण, ढ, ठ, ङ अक्षर होते हैं इन पर कौन सार्थक नाम रखता है?जन्म पत्री कक्षा आठ-दस पास पंडित बनाता है या बहुत पढ़ा लिखा पंडित बनाता है, सब असत्य होता है - केवल रुपये कमाने के धंधे हैं। हाथ देखकर भविष्य बताने वाले ज्योतिषी पर किसी ने सत्य लिखा है -

नजूमी राह में बैठा किस्मत बताता है
दर हकीकत वह किस्तम अपनी ही बनाता है।
बजाहिर देखता है हाथ वो दुनियावालों के
जब गौर से देखा तो वह हाथ अपने ही दिखाता है।।

ग्रह जड़ हैं, इनकी शान्ति के लिए की गई प्रार्थनाएँ ये सुन सकेंगे?करोड़ों मील दूर स्थित ये ग्रह हैं, भूमि पर बैठे हुए पंडित को इनकी क्रूरता, इनकी शान्ति दिखाई देती है?कैसी कल्पना है, कैसा अन्धविश्वास है।

शुभ मुहूर्त, अशुभ मुहूर्त की जानकारी इन पंडितों को कुछ भी नहीं होती लेकिन फिर भी अधिकांश पढ़े-लिखे नेता-अभिनेता शुभ मुहूर्त की जानकारी प्राप्त करने के लिए जाते हैं और अपना कार्य करते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद छः सौ देशी रियासतों के पंडत लोग अपने-अपने राजाओं को न बता सके कि रियासतें समाप्त होने वाली हैं फिर भी हम अन्धविश्वास में फँसे हुए हैं।

देव सो गये हैं, कोई शुभ कार्य इन दिनों न करें, यह मान्यता भी अवैज्ञानिक है। सूर्य देवता, चन्द्रमा देवता, वायु देवता, अग्नि देवता, नक्षत्र देवता आदि अन्य अनेक देवता अपने नियम को न छोड़कर कार्य में रत हैं, फिर कौन सा देवता सो गया है। इनमें से कोई भी देवता अपने नियत कार्य को छोड़ेगा तो संसार के कार्य कैसे चलेंगे?इस पर विचार करें, अन्धविश्वास में न फंसे।

हमारे बालक के विवाह की तारीख निश्चय होने के बाद दूसरे दिन कन्या पक्ष का फोन आया - देव सो गये हैं - अतः देवों के जागने पर तीन महीने बाद विवाह हो सकेगा। हमने जब सुना तो हम तुरन्त कन्या पक्ष के घर गये। पहले उनकी उक्त बात सुनी, फिर हमने कहा कौन से देव सो गये?सूर्य-चन्द्र-वायु-आकाश-अग्नि आदि देवों में कौन सा देव सो गया है?अगर सो गया है तो अग्नि में हाथ डालें तो

नहीं जलना चाहिए। सूर्य की किरणें गरम है या ठण्डी?ये नियम से उदय अस्त हो रहे हैं आदि बातें सुनकर विवाह निश्चित तिथि में करने को वे सहमत हो गये।

विवाह में पंडित गुण मिलाते हैं - वर-कन्या के सुख का योग बताते हैं - नवजात शिशु का जन्म पत्र बनाकर आयु 70-80 बताते हैं आदि। जब वर कन्या में बनती नहीं या कोई भयंकर संकट आता है तथा जन्म पत्र वाले बालक पाँच-छः वर्ष में ही मृत्यु होती है तब पंडित जी से पूछें तो यही उत्तर देंगे -

''दैव इच्छा बलीयसी'' भाग्य बलवान है, ईश्वर के नियम के आगे हमारी कहाँ चलती है। जब कर्मानुसार ईश्वरीय व्यवस्था है तो इस अवैज्ञानिक मान्यता में हम पढ़े लिखे क्यों फंसे हैं?

जड़ को चेतन समझकर व्यवहार करना अवैज्ञानिक

आज संसार में मूर्ति पूजा प्रचलित है, क्या यह वैज्ञानिक दृष्टि से ठीक है?थोड़ा इस पर विचार करें - एक उत्तम कुशल चित्रकार के पास जाकर हमने कहा हमारे बाबा का चित्र बना दें। चित्रकार बोले- उनका कोई पुरा चित्र (फोटो) आपके पास हो तो लायें बना देंगे। हमने कहा हमने उन्हें देखा ही नहीं है, न उनका कोई चित्र ही हमारे पास है। चित्रकार बोले बिना चित्र के हम उनका चित्र नहीं बना सकते। एक अच्छा चित्रकार भी बिना देखे हुए का चित्र बनाने में असमर्थ है तो वेद वर्णित - **''न तस्य प्रतिमा अस्ति''** तथा **'सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं''** जिसको किसी ने उनकी मूर्ति न होने से देखा नहीं तथा सर्वव्यापक वह ईश्वर शरीर रहित नस नाड़ियों के बन्धन से रहित है तो उसकी मूर्ति कैसे बन सकती है?इस आधार पर मूर्तिपूजा निरर्थक है।

मूर्तिपूजा अवैज्ञानिक इसलिए भी है कि वेदों के अतिरिक्त दर्शनशास्त्रों, ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, रामायण, महाभारतादि किसी भी प्राचीन ग्रन्थ में जड़ मूर्ति पूजा का विधि विधान नहीं मिलता है। शंकराचार्य, कबीर, नानक, तुकाराम आदि सन्तों ने इसे उचित नहीं माना है। सत्य तो यह है कि वह निराकार है हमने उसकी आकृति बना दी। इससे सारी व्यवस्था उलट गई - जो हमें खिलाता है - उसे हम भोग लगाने लगे, जाड़ों में रजाई उढ़ाने लगे, मेवों का प्रसाद चढ़ाने लगे, गर्मियों में एसी, कूलर की व्यवस्था करने लगे - जो ईश्वर इनको हमें प्रदान करता है - हम उसे देते हैं - मान करते हैं या अपमान?कोई निर्धन धनवान को एक पैसा दान दे तो मान या अपमान?

इसके अतिरिक्त पंडितों की कथा में यह सुनकर शिव के गण आयेंगे शत्रुओं का विनाश करेंगे इस अवैज्ञानिक अन्धविश्वास से सोमनाथ आदि मन्दिरों का विध्वंस हुआ। सुवर्णादि धन वैभाव के साथ तथाकथित पंडितों की जो हानि या दुर्दशा हुई, वह सब जानते हैं, फिर भी हम मूर्ति-पूजा के अन्धविश्वास में फंसे हुए हैं। हम भारतवासी वीर होते हुए भी इस अवैज्ञानिक जड़ मूर्ति पूजा के कारण पराधीन हुए। स्वामी दयानन्द ने सत्य ही लिखा है कि जड़ की पूजा करने से अन्तःकरण में जड़त्व का भाव आ जाता है। बुद्धि जड़ हो जाती है, सोच विचार कर कार्य करने की शक्ति समाप्त हो जाती है।

योगदर्शन के व्यास भाष्य में पूजा का अर्थ लिखा है - 'पूजनं नाम सत्कारः' अर्थात् यथोचित व्यवहार को पूजा कहते हैं। जड़ को जड़ समझकर उससे वैसा व्यवहार करना चाहिए। जो जड़ आपके द्वारा किये गये व्यवहार को न जानता है, न समझता है, न आशीर्वादादि देता है उसकी पूजा वैज्ञानिक नहीं अवैज्ञानिक है। इस अवैज्ञानिकता के कारण चेतन माता-पिता, आचार्य आदि वृद्ध जन उपेक्षित हो गये हैं। जिनको खिलाने से, जिनका यथोचित सत्कार करने से हमें आशीर्वाद मिलता है - वे आज मूर्तिपूजा के कारण उपेक्षित हो गये हैं। जो खा सकते हैं, जिन्हें भोजनादि से तृप्ति हो सकती है, उनकी ओर हमारा ध्यान नहीं। आज जो देश भर में वृद्धाश्रम बन रहे हैं, क्या यह हमारे लिए गौरव की बात है। किसी कवि का वचन है -

यं माता पितरौ क्लेशं सहेते सम्भवे नृणाम्।
न तस्य निष्कृति कर्तुं शक्या वर्ष शतैरपि।।

सामर्थ्यशाली मनुष्य के रहने पर भी जिसके माता-पिता कष्ट में रहते हैं, उसका कोई प्रायश्चित नहीं है, उसका कल्याण कभी सम्भव नहीं है। इस अन्धविश्वास जन्य अवैज्ञानिक जड़ पूजा ने - ''मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव'' आदि पुण्यप्रद भावों को समाप्त कर दिया। जिन माता-पिता आदि की कृपा से, स्नेह से, सहयोग से, समर्पण भाव से हम इतने बड़े, सामर्थ्यशाली बने हैं, उनकी उपेक्षा करने वाले उनका यथोचित सत्कार न करने वाले क्या हम ईश्वर भक्त हो सकते हैं। अतः जड़ मूर्ति की इस अवैज्ञानिक पूजा को त्यागकर जीवित चेतन माता-पिता तथा वृद्धजनों का आदर करना चाहिए।

सत्य तो यह है कि इन अवैज्ञानिक अन्धविश्वासों को त्यागकर हमें वेद मार्ग का अनुसरण करना चाहिए -

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि।

(अथर्व. 1-1-4)

सन्त तुलसीदास 'रामचरित मानस' में लिखते हैं -

वरनाश्रम निज-निज धरम निरत वेद-पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहिं, न भय शोक न रोग।।

और

सब नर करहिं परस्पर प्रीति।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति रीति।।

युगों तक भारतीय जन वेद के शाश्वत सत्य वैज्ञानिक मार्ग पर चलते रहे, तब भारत ने 'विश्व गुरु' की गौरवमय संज्ञा प्राप्त की थी। मनु ने घोषणा की -

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्र जन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।

भारतीय श्रेष्ठ जनों से भू-मण्डल के सभी मानवों ने चरित्र की शिक्षा प्राप्त की। जब हम वेद वर्णित वैज्ञानिक सत्य मार्ग पर चलते रहे तभी 'आदर्श राम राज्य' की स्थापना कर सके थे।

वर्तमान में छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, स्वार्थ वृत्ति, भोग भावना तथा संग्रह वृत्ति की भावना हमारे अन्दर व्याप्त है। साथ ही भाई-भाई का विरोध, वृद्धजनों की उपेक्षा वृत्ति, असुरक्षा का भाव यह सब अवैज्ञानिक अन्धविश्वासों की देन है। बड़े-बड़े शिक्षित व्यक्ति, पंडित समुदाय, वैज्ञानिक, शासक वर्ग भी इस अवैज्ञानिक मार्ग पर चल रहे हैं। वेद के शाश्वत् सत्य मार्ग पर चलने के लिए अन्धविश्वासों को दूर करने के लिए हमें एक बार स्वामी दयानन्द लिखित 'सत्यार्थ प्रकाश' का अध्ययन करना चाहिए।

- 5, सीताराम भवन, फाटक, आगरा कैण्ट-282001,
मो.:-08909347329

आर्य जगत से साभार

ग्रामीण भारत में जीवन दाँव पर आधुनिक कृषि

– डॉ. कश्मीर उप्पल

मानव बनाम प्रकृति का टकराव जलवायु परिवर्तन के रूप में हमारे सामने आ रहा है। खेती में रसायनों के प्रयोग से न केवल मिट्टी की उर्वरता समाप्त हो रही है बल्कि अब रासायनिक खेती कृषकों और वृहत्तर समाज के स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव डाल रही है। कृषि में सर्वाधिक उन्नत कहे जाने वाला पंजाब इस पीड़ा को सबसे ज्यादा भुगत रहा है। दु:खद तो यह है कि अब पूरे देश को पंजाब बनाने की कोशिश चल रही है।

प्रथम विश्वयुद्ध (1914-18) और भारतीय कृषि के बीच का सम्बन्ध आज भी भारतीय कृषि को रक्तरंजित कर रहा है। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान वायुमंडल स्थित नाइट्रोजन से विस्फोटक पदार्थ निर्मित करने के कारखाने स्थापित किये गये थे। इन विस्फोटक पदार्थों के माध्यम से ही इतिहास में सबसे बड़ी जन-धन हानि की गई थी। प्रथम विश्वयुद्ध के समाप्त हो जाने के बाद यह प्रश्न उठा कि अब इन कारखानों का क्या किया जाए?व्यावसायिक बुद्धि ने युद्ध के दौरान हुए विध्वंस से पुनर्निमाण हेतु इन कारखानों से धन अर्जित करने की योजना बनाई तथा इन कारखानों में उत्पन्न फास्फोरस, नाइट्रोजन और पोटेशियम का उपयोग खेती के काम आने वाले सस्ती रासायनिक खाद के रूप में प्रारम्भ कर दिया गया।

प्रथम विश्वयुद्ध में यूरोप के शहरों में इतने बड़े पैमाने पर विध्वंस हुआ कि शहरों के विशाल भवनों का मलबा हटाना और उठाना एक समस्या बन गया था। इस समस्या से निपटने हेतु सेना की गाड़ियों में बड़े-बड़े टायर वाले चक्के लगाकर मलबा खींचने का काम किया गया था। यही गाड़ियाँ ट्रैक्टर अर्थात् खींचने वाला इंजन कहलाने लगीं। युद्ध के बाद हुए निर्माण कार्यों के बाद इन ट्रैक्टरों को भी किसानों को मिट्टी खींचने के लिए दे दिया गया। कुछ ही समय में रासायनिक खाद और ट्रैक्टर आधुनिक कृषि के आधार बन गए।

1960 के दशक में पंजाब में पहली 'हरित क्रान्ति' में रासायनिक खाद व कीटनाशकों, ट्रैक्टरों और मशीन चालित भूमिगत पानी निकालने के इंजनों ने भारतीय कृषि के स्वरूप को बदल दिया। प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक सर अलबर्ट हावर्ड ने यूरोप और अमेरिका में कृषि के यंत्रीकरण के समय ही चेतावनी दे दी थी कि आने वाले वर्षों में रासायनिक खाद औद्योगिक युग की सबसे बड़ी विफलताओं में गिनी जायेगी। पंजाब में पचास वर्षों के अन्दर ही हरित क्रान्ति एक बड़ी कृषि विफलता के रूप में हमारे सामने है।

पंजाब के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने विश्व स्वास्थ्य संगठन, प्रमुख मेडिकल संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों (एन.जी.ओ.) और सामाजिक कार्यकर्ताओं के सहयोग से प्रदेश की कैंसर जनगणना की। पंजाब में एक दिसम्बर से 31 दिसम्बर, 2012 तक कराए गए इस सर्वेक्षण में चौंकाने वाले तथ्य सामने आये हैं। इस सर्वेक्षण के अनुसार पिछले पांच साल में कैंसर से 33,318 लोगों की मृत्यु हुई है और 23, 874 लोग कैंसर रोग से पीड़ित हैं। इसके अलावा राज्य में 84,453 लोग ऐसे हैं जिनमें कैंसर के लक्षण पाए गए हैं। पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री मदन मोहन मित्तल के अनुसार यह सर्वेक्षण पंजाब के 12,603 गांवों और 217 शहरों के 50,53,477 परिवारों के मध्य हुआ है। इसमें पंजाब की कुल जनसंख्या के 97.78 प्रतिशत भाग की कैंसर रोग सम्बन्धी जानकारी संकलित की गई है। पंजाब की जनसंख्या 2,70,86,228 है जिसमें से 2,64,84,434 लोग इस सर्वेक्षण में शामिल हुए। पंजाब में कैंसर किसी एक क्षेत्र विशेष तक सीमित रोग नहीं है। यह पंजाब का 'राज्य रोग' बन चुका है जो कि प्रकृति प्रदत्त नहीं वरन लाभ केन्द्रि पूंजीवादी संस्कृति की देन है। अभी तक यह माना जाता था कि पंजाब के मालवा क्षेत्र के भटिण्डा, फरीदकोट, संगकर, मुक्तसर आदि जिले कैंसर से सर्वाधिक पीड़ित हैं। मालवा के कपास बेल्ट में कीटनाशकों का प्रयोग सबसे अधिक मात्रा में किया जाता है। इन जिला में पानी का एक भी नमूना पीने लायक नहीं पाया गया है।

दक्षिण पंजाब में अबोहर से चलकर बीकानेर जाने वाली ट्रेन नंबर 339 को लोगों ने कैंसर एक्सप्रेस का नाम दे दिया है। इस ट्रेन से प्रतिदिन औसतन 100 कैंसर पीड़ित मरीज इलाज के लिए सरकारी अस्पताल में पहुँचते हैं। पंजाब में एक भी बड़ा सरकारी कैंसर संस्थान नहीं है। अधिकांश लोग निजी अस्पतालों में कैंसर का खर्च नहीं उठा पाते हैं। पंजाब का औद्योगिक और व्यापारिक जिला लुधियाना कैंसर रोग से होने वाली मृत्यु दर में प्रथम स्थान पर है। इसके बाद क्रमश: जालन्धर, अमृतसर और फिरोजपुर जिले आते हैं। इस सर्वेक्षण पर प्रस्तावित दो करोड़ रुपये अनुमानित व्यय के स्थान पर कुल एक करोड़ सत्तर लाख रुपये ही खर्च हुए। इस खर्च को केन्द्र और राज्य के मध्य 75-25 अनुपात में वहन किया जाना था। इस तरह पंजाब की कुल जनसंख्या की लगभग 98 प्रतिशत जनता का प्रतिव्यक्ति सर्वेक्षण व्यय मात्र साठ पैसे रहा है।

सर्वेक्षण से पूर्व पंजाब की सरकार कैन्सर रोग सम्बन्धी लेखन को पंजाब को बदनाम करने की कोशिश के रूप में देखती आई है। पंजाब सरकार ने अन्तत: अपने दूसरे कार्यकाल में सर्वेक्षण कराने का निर्णय लिया।

जोशी अधिकारी समाज विज्ञान संस्थान दिल्ली ने पंजाब में 'कृषि संकट, ग्रामीण भारत में जीवन दांव पर' नामक अनुसंधान रिपोर्ट वर्ष 2011 में प्रकाशित की थी। इस संस्थानके कृषिगत एवं सांस्कृतिक आधार पर पंजाब के मालवा, माझा और दोआब क्षेत्र के चुने हुए गांवों में 'सेम्पल-सर्वे' किया था। इस अध्ययन के अनुसार पंजाब में व्यापक रूप से 'हाइब्रीड बीजों' का उपयोग किया जाता है। पंजाब में खरीफ और रबी दोनों मौसम की 94 प्रतिशत फसलें सिंचाई पर आधारित हैं। नहरों के व्यापक संजाल के बावजूद 90 प्रतिशत क्षेत्र की सिंचाई ट्यूबवैल से ही होती है। इसका अर्थ है पंजाब में सिंचाई का मुख्य स्रोत भूमिगत जल ही है। पंजाब के भटिंडा जिले में ग्यारह सौ फुट से अधिक गहरे ट्यूबवैल से पानी मिलता है। सम्पन्न किसानों के भूमिगत जल स्रोत गरीब किसानों के खेतों का भूमिगत जल भी पी जाते हैं। गरीब किसानों के और अधिक गरीब हो जाने का एक कारण उनके भूमिगत जल का चुरा लिया जाना भी है। नेशनल सेम्पल सर्वे संगठन के एक अनुमान के अनुसार देश के सभी राज्यों में पंजाब के किसान अधिक ऋणग्रस्त हैं। इन ऋणों की ब्याज की दर बहुत ऊँची, 57 प्रतिशत वार्षिक तक पाई गई है। पंजाब के किसानों में आत्महत्या की घटनाओं में वृद्धि हुई है। इसका प्रमुख कारण ऋणग्रस्तता है। यहाँ कैंसर जनित बीमारी से भी ऋणग्रस्तता बढ़ी है। बांग्लादेश के नोबल पुरस्कार विजेता मोहम्मद युनुस ने अपनी भारत यात्रा के दौरान कहा था कि यदि भारत में किसान आत्महत्या कर रहे हैं, तो इसका अर्थ है कि वे ऋण चुका पाने में असमर्थ हैं। इससे सिद्ध होता है कि भारत का 'ऋण कार्यक्रम' बुरी तरह बनाया गया है। जबकि बांग्लादेश में बैंकों का उद्देश्य ऋण की सुरक्षा नहीं वरन् ऋणी की रक्षा करना है। इस समय कई राज्य कृषि में पंजाब के मॉडल को अपना रहे हैं। कृषि यंत्रों के दुरुपयोग से धरती एक कारखाना और किसान 'लुटेरा' बन जाता है। भारतीय संस्कृति में धरती को माता इसीलिए कहा जाता है क्योंकि वह भी समस्त प्राणी और वनस्पति जगत की तरह एक जीवित तत्त्व है।

– नित्यनूतन के मई, 2013 अंक से साभार

The five homely gods

- Neela Sood

inner voice

The special feature of Hindu scriptures is that various scholars and men of wisdom have interpreted them in different ways. This applies also to the 'five gods' which find references in our scriptures. Maharishi Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, believed that these 'five gods' are the real 'living gods'.

The first living god is the mother. It is the duty of the sons and daughters to serve this goddess with all their heart and soul and keep her happy. Let she not be treated harshly ever, whatever the circumstances. The second god is the father. He should also be served all through his life.

The third god is the teacher who bestows knowledge upon his pupils. He should be revered and given respect. The fourth god is the altruistic teacher of humanity who is learned, deeply religious, upright, well-wisher of all and goes from place to place preaching the truth; there by freeing people from ignorance. The fifth god is the husband for his wife and the wife for her husband.

Accepting these five living gods can make home truly a temple of worship. But who is the supreme amongst these five? Swami Dayanand Saraswati opined that without any doubt it was the mother since she was the only one who could go to the extent of annihilating herself to give a new lease of life to her child.

Yes, he is hundred percent right. The way she responds to the problems of her children is different from the way all others respond as illustrated by this small anecdote.

On one wet day when the school- going girl returned home drenched, the father asked, "Why didn't you carry an umbrella?" The brother said, "You will learn only when cold and fever would catch you". The elder sister said, "You could have waited for the rain to stop." But it was the mother who came running with a towel and set of clothes and sighed, "Only if the rain had waited for some time, my daughter would have reached home safe."

- Hindustan Times, New Delhi, **से साभार**

वहाबियत की असलियत

– खुर्शीद अनवर

हालांकि पहले भी आतंकवाद पर कोई बहस या बातचीत आम जन के दिमाग को सीधे इस्लाम की तरफ खींच ले जाती थी। लेकिन विश्व व्यापार केंद्र पर हमले और उसके बाद दो नारों 'आतंकवाद के खिलाफ जंग' और 'दो सभ्यताओं के बीच टकराव' ने ऐसी मानसिकता बनाई कि दुनिया भर में आम इंसानों के बीच एक खतरनाक विचार पैठ बनाने लगा कि 'सारे मुसलमान आतंकवादी होते हैं'। कुछ 'नर्मदिल' रियायत बरतते हुए इसे 'हर आतंकवादी मुसलमान होता है' कहने लगे। था तो यह राजनीतिक षड्यंत्र, लेकिन आम लोग हर मुद्दे की तह में जाकर पड़ताल करके समझ बनाएं यह मुमकिन नहीं। मान्यताएं उनमें ठूंसी जाती हैं। जिसे 'इस्लामी आतंकवाद' कहा गया, वह दरअसल है क्या?यह आतंकवाद सचमुच इस्लामी है या कुछ और?अगर इस्लाम ही है तो इसकी जड़ें कहां हैं?इस तथ्य का खुलासा करने के लिए एक शब्द का उल्लेख और उसका आशय समझ कर ही आगे बात की जा सकती है। 'जिहाद'! आखिर जिहाद है क्या?इसकी उत्पत्ति कहां से हुई और आशय क्या था?

जिहाद की कुरान में पहली ही व्याख्या 'जिहाद अल–नफस' यानी खुद की बुराइयों के खिलाफ जंग है।

जब ऐसा है तो फिर अचानक वह जिहाद कहां से आया जो इंसानों का, यहां तक कि मासूम बच्चों का खून बहाना इस्लाम का हिस्सा बन गया। दुनिया भर में 'इस्लामी' आतंकवाद खतरा बन मंडराने लगा। पर कहां से आया यह खतरा?

इस्लाम जैसे–जैसे परवान चढ़ा, अन्य धर्मों की तरह इसके भी फिरके बनते गए। एक रूप इस्लाम का शुरू से ही रहा और वह था राजनीतिक इस्लाम। जाहिर है कि सत्ता के लिए न जाने कितनी जंग लड़ी गई और खुद मोहम्मद ने जंग–ए–बदर लड़ी। आसानी से कहा जा सकता है कि यह जंग भी मजहब को विस्तार देने के लिए लड़ी गई। मगर असली उद्देश्य था सत्ता और इस्लामी सत्ता। जंग–ए–बदर में सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा किसी जंग में होता है, पर जिहाद की कुरान में दी गई परिभाषा फिर भी जस की तस रही। वर्ष 1299 में राजनीतिक इस्लाम ने पहला बड़ा कदम उठाया और ऑटोमन साम्राज्य या सल्तनत–ए–उस्मानिया की स्थापना हुई। (1299–1922)। आम धारणा कि यह जिहाद के नाम पर हुआ, मात्र मनगढ़ंत है। सत्ता की भूख इसकी मुख्य वजह थी।

जिहाद की नई परिभाषा गढ़ी अठारहवीं शताब्दी में मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब ने, जिसके नाम से इस्लाम ने एक नया मोड़ लिया, जिसमें जिहाद अपने विकृत रूप में सामने आया। नज्त में जन्मे इसी मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब (1703–1792) से चलने वाला सिलसिला आज वहाबी इस्लाम कहलाता है, जो सारी दुनिया को आग और खून में डुबो देना चाहता है।

मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब के आने से बहुत पहले सूफी सिलसिला मोहब्बत का पैगाम देने और इंसानों को इंसानों से जोड़ने के लिए आ चुका था। इसका प्रसार बहुत तेजी से तुर्की, ईरान, अरब और दक्षिण एशिया में हो चुका था। सूफी सिलसिले से जो कर्मकांड जुड़ गए वह अलग मसला है, मगर हकीकत है कि सूफी सिलसिले ने इस्लाम को बिल्कुल नया आयाम दे दिया और वह संकीर्णता की जंजीरें तोड़ता हुआ इस्लाम की हदें भी पार कर गया।

सल्तनत–ए–उस्मानिया से लेकर फारस और अरब तक सूफी सिलसिलों ने जो दो बेहद महत्त्वपूर्ण काम अंजाम दिए वे थे गुलाम रखने की परंपरा खत्म करना और स्त्री मुक्ति का द्वार खोलना।

फारस में मौलाना रूमी के अनुयायियों द्वारा मेवलेविया सिलसिले ने तेरहवीं सदी में औरतों के लिए इस सूफी सिलसिले के दरवाजे न सिर्फ खोले बल्कि उनको बराबर का दर्जा दिया। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि सूफियों के संगीतमय वन्दना नृत्य (सेमा) में पुरुषों और महिलाओं की बराबर की हिस्सेदारी होने लगी। मौलाना रूमी की मुख्य शिष्या फखुंनिसा थी। उनका रुतबा इतना था कि उनके मरने के सात सौ साल बाद मेवलेविया सिलसिले के उस समय के प्रमुख शेख सुलेमान ने अपनी निगरानी में उनका मकबरा बनवाया।

महान सूफी शेख इब्न–अल–अरबी (1165–1240) खुद सूफी खातून फातिमा बिन्त–ए–इब्न–अल–मुथन्ना के शागिर्द थे। शेख इब्न–अल–अरबी ने खुद अपने हाथों से फातिमा बिन्त–ए–इब्न–अल–मुथन्ना के लिए झोपड़ी तैयार की थी, जिसमें उन्होंने जिंदगी बसर की और वहीं दम तोड़ा।

मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब ने एक–एक कर इस्लाम में विकसित होती खूबसूरत और प्रगतिशील परंपराओं को ध्वस्त करना शुरू किया और उसे इतना संकीर्ण रूप दे दिया कि उसमें किसी तरह की आजादी, खुलेपन, सहिष्णुता और आपसी मेलजोल की गुंजाइश ही न रहे। कुरान और हदीस से बाहर जो भी है उसको नेस्तनाबूद करने का बीड़ा उसने उठाया। अब तक का इस्लाम कई शाखाओं में बंट चुका था। अहमदिया समुदाय अब्दुल–वहाब के काफी बाद उन्नीसवीं सदी में आया लेकिन शिया, हनफी, मुलायिकी, सफई, जाफरिया, बाकरिया, बशरिया, खुलफिया हंबली, जाहिरी, अशरी, मुन्तजिली, मुर्जिया, मतरुदी, इस्माइली, बोहरा जैसी अनेक आस्थाओं ने इस्लाम के अंदर रहते हुए अपनी अलग पहचान बना ली थी और उनकी पहचान को इस्लामी दायरे में स्वीकृति बाकायदा बनी हुई थी।

इनके अलावा सूफी मत तो दुनिया भर में फैल ही चुका था और अधिकतर पहचानें सूफी मत से रिश्ता भी बनाए हुए थीं। लेकिन मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब की आमद और प्रभाव ने इन सभी पहचानों पर तलवार उठा ली। 'मुख्तसर सीरत–उल–रसूल' नाम से अपनी किताब में खुद मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब ने लिखा 'जो किसी कब्र, मजार के सामने इबादत करे या अल्लाह के अलावा किसी और से रिश्ता रखे वह मुशरिक (एकेश्वरवाद विरोधी) है और हर मुशरिक का खून बहाना और उसकी संपत्ति हड़पना हलाल और जायज है।'

यहीं से शुरू हुआ मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब का असली जिहाद, जिसने छह सौ लोगों की एक सेना तैयार की और हर तरफ घोड़े दौड़ा दिए। तमाम तरह की इस्लामी आस्थाओं के लोगों को उसने मौत के घाट उतारना शुरू किया। सिर्फ और सिर्फ अपनी विचारधारा का प्रचार करता रहा और जिसने उसे मानने से इनकार किया उसे मौत मिली और उसकी संपत्ति लूटी गई। मशहूर इस्लामी विचारक जैद इब्न अल–खत्ताब के मकबरे पर उसने निजी तौर पर हमला किया और खुद उसे गिराया। मजारों और सूफी सिलसिले पर हमले का एक नया अध्याय शुरू हुआ। इसी दौरान उसने मोहम्मद इब्ने सांद के साथ समझौता किया। मोहम्मद इब्ने सांद दिरिया का शासक था और धन और सेना दोनों उसके पास थे। दोनों ने मिलकर तलवारों के साथ–साथ आधुनिक असलहों का भी इस्तेमाल शुरू किया। इन दोनों के समझौते से दूरदराज के इलाकों में पहुंच कर अपनी विचारधारा को थोपना और खुलेआम अन्य आस्थाओं को तबाह करना आसान हो गया। अन्य आस्थाओं से जुड़ी तमाम किताबों को जलाना मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब का शौक–सा बन गया। इसके साथ ही उसने एक और घिनौना हुक्म जारी किया और वह यह था कि जितनी सूफी मजारें, मकबरे या कब्रें हैं उन्हें तोड़ कर वहीं मूत्रालय बनाए जाएं।

सऊदी अरब जो कि घोषित रूप से वहाबी आस्था पर आधारित राष्ट्र है, उसने मोहम्मद इब्न–अब्दुल–वहाब की परंपरा को जारी रखा। बात यहां तक पहुंच गई कि 1952 में बुतपरस्ती का नाम देकर उस पूरी कब्रगाह को समतल बना दिया गया जहां मोहम्मद के पूरे खानदान और साथियों को दफन किया गया था। ऐसा इसलिए किया गया कि लोग जियारत के लिए इन कब्रगाहों पर जाकर मोहम्मद और उनके परिवार को याद करते थे। अक्टूबर 1996 में काबा के एक हिस्से अल्मुकर्रमा को भी इन्हीं कारणों से गिराया गया। काबा के दरवाजे से पूर्व स्थित अल–मुल्ताजम जो कि काबा का यमनी हिस्सा है, उसके खूबसूरत पत्थरों को तोड़ कर वहां प्लाइवुड लगा दिया गया, जिससे कि लोग पत्थरों को चूमें नहीं, क्योंकि ऐसा करने पर वहाबी इस्लाम के नजदीक यह मूर्तिपूजा हो जाती है। अभी हाल में 'द इंडिपेंडेंट' की एक रिपोर्ट के अनुसार मक्का के पीछे के हिस्से में जिन खंभों पर मोहम्मद की जिंदगी के महत्त्वपूर्ण हिस्सों को पत्थरों पर नक्काशी करके दर्ज किया गया था, उन खंभों को भी गिरा दिया गया। इन खंभों पर की गई नक्काशी में एक जगह अरबी में यह भी दर्ज था कि मोहम्मद किस तरह से मेराज (इस्लामी मान्यता के अनुसार मुहम्मद का खुदा से मिलने जाना) पर गए।

वहाबियत इस्लाम के पूरे इतिहास, मान्यताओं, परस्पर सौहार्द और पहचानों के सह–अस्तित्व के साथ खिलवाड़ करता आया है। एक ही पहचान, एक ही तरह के लोग, एक जैसी किताब और नस्ली शुद्धता का नारा हिटलर ने तो बहुत बाद में दिया, इसकी बुनियाद तो वहाबियत ने उन्नीसवीं शताब्दी में ही इस्लाम के अंदर रख दी थी।

अरब से लेकर दक्षिण एशिया तक वहाबियत ने अपनी इस शुद्धता का तांडव बहुत पहले से दिखाना शुरू कर दिया था, लेकिन पिछले कुछ दशकों में इसने अपना घिनौना और क्रूर रूप और भी साफ कर दिया। जहां एक तरफ मेवलेविया सिलसिले ने तेरहवीं सदी में औरतों के लिए शेष पृष्ठ 9 पर

समाज को उन्नत बनाने के लिए किसी भी विचारधारा का प्रचार–प्रसार करना गलत नहीं है लेकिन अपनी विचारधारा को दूसरों पर या अन्य मतावलम्बियों पर थोपना अपराध की श्रेणी में आता है। यदि आप हमारी बात मानते हैं तो ठीक बरना कत्ल कर देंगे यह सरासर गलत है। संकीर्णता तथा जकड़न को तोड़ने के लिये अहिंसात्मक तरीके से प्यार तथा सद्‌भाव से अपनी बात कहना तथा अन्यों को प्रभावित करना आज की आवश्यकता है।

जिहाद का सबसे सार्थक अर्थ है खुद की बुराईयों के खिलाफ जंग। लेकिन निरपराध इन्सानों, बच्चों का खून बहाना, धार्मिक स्थलों पर हमला करके इन पवित्र स्थलों को अपवित्र करना यह कौन सा जिहाद है। जिहाद की सच्ची परिभाषा आम जनता को तथा तथाकथित जिहादियों को समझनी होगी

– स्वामी अग्निवेश

VEGETARIANISM

A Meatless Menu for Kids

Young Students across the united States have long been subject to the rather unpleasant school lunch, a salty, greasy, card-board-like array of barely edible food like substances. These lunches typically include the lowest quality : oily pizzas, salads made purely of iceberg lettuce and, of course, the appalling mystery meat of the day.

One school in Flushing, New York, has had enough. The Active Learning Elementary School, founded just five years ago on the principle that strong academic achievement is bolstered by a healthy lifestyle, is the first public school in the US to go completely vegetarian. Roasted chickpeas, black bean quesadillas, vegetarian chili and curries, real vegetables, brown rice and falafel have replaced the standard public school menu.

A healthy lunch: *Student Arianna Francisco seems amused by School Chancellor Dennis Walcott's attempt to eat salad with a spoon (or is it a spork?)*

The school became 100% vegetarian in January, 2013, meeting all the state requirements for protein while staying within budget.

The Kids love it. While eating her quesadilla, nine-year-old Marian Satti, told The New York Daily News, "This is so good! I'm enjoying that it doesn't have a lot of salt in it." School Chancellor Dennis Walcott stated, "I don't eat fried foods. I don't dring soda. I try not to have sweets too often, and that's what we want for our students; to make sure they eat healthy both at home and school."

- Hinduism Today, से साभार

St. Stephen's Lecture

I would like to begin by putting across a mantra from the Veda –"parmatna srishti ke kan kan me hai", which means God pervades in every particle of our Universe and forces us to reflect on how we can relate to such a creator or God. In relation to this there is another mantra from the Yajur Veda regarding which Mahatma Gandhi had emphasized that if all the knowledge in the world is finished and we do not find anything to read and write and only if this mantra remains then we can create knowledge once again. This is the importance of the following Mantra- "Isha vashyam idam sarvam, yatkinch jagtyam jagat. Ten Tyakten Bhunjeetha Ma Gridhah Kasya Switdhanm."

In this mantra it is said that there is God in every particle of the world. Scientists today call it "God Particle". The conference that is going on in CERN Laboratory in Geneva is being attended by almost 3000 top most scientists of the world who are undertaking a huge experiment to find out the root of the creation of the universe. They want to find out what binds the whole universe and all these particles together. They are carrying on this experiment for many years. 4th July, 2012 they came out with the phenomenon Higgs boson and for the common people, to make it understandable they called it The God particle. We should try to find out about this God particle with keen interest and also understand what it is all about? It concerns the inner most of our being- what are we, why do we exist, what is our motive in life? All this will come out from the understanding of this God Particle and we will realize this in due course of time.

HUMARA AATMA, BUDDHI, VIVEK HUME JO KAHE HUME WOH KARNA HAI. AAPKO YEH FAISLA KARNA HAI.AAP KISI KO BHI MORTGAGE KAR DENGE, APNA VIVEK, BUDDHI AUR KISI KO BHI GURU MAAN LENGE KOI HUMAN BEING AAP JAISE HI TOH AAP BAHUT BADE KHATRE ME PAD JAYENGE. KISI KO BHI GURU NAHI MAANANA.

I joined the students of St. Stephen's College Delhi on the occasion of Teacher's Day. Teacher's Day translates to shikshak divas in Hindi. Teacher has various synonyms like adhyapak, guru, etc. The word guru is good as well as dangerous because these days there are a lot of big gurus that have come to our notice. Lately, we all have been hearing and reading about today's fresh and modern gurus. From the lot of modern gurus there is one guru or what would be a more appropriate word for him is "gurughantal" who is in the jail in Jodhpur. People like them are hiding their true faces behind the mask of being a guru. In real life they are playing the complete opposite role of what a guru should be like. In this context I get reminded of Amaranth there are stalagmites that are formed and a lot of people who are superstitious go all the way to Amaranth to worship these pillars commonly called as shivalingas. We all have heard about 'Amaranth me barfaani baba'. Few years back I had said that this is 'andhvishwaas' or 'blind faith' because these pillars are just ice pillars and have scientific reasons behind its formation. They are natural phenomenon and there is nothing divine about them. On having said this there was my effigy burning that took place in Punjab, Jammu, Chandigarh, Haryana that this man said bad things about our god and has shamed our gods. I told them I haven't shamed their gods. When global warming took place a few years back there was huge melting of ice that simultaneously took place in these high mountain ranges. That time religious tourism had not begun. The governor panicked and went on a helicopter with artificial ice to artificially construct the shivalinga again so that the devotees find something to see when they would visit the mountain ranges. The phenomenon

AASTHA KE SAATH ANDH VISHWAAS KO NAHI JODNA HAI. JAB ANDHVISHWAAS SE JODTE HAI TO HUM PARMATMA AUR PUJA KE NAAM PAR PATHARON KI PUJA KARNE LAGTE HAI.

is that ridiculous. This year 28th June when the pilgrimage started the shivalinga had melted upto 40%. There were still 36 days left and the shivalinga melted completely. People did not stop going and they are still going. Why are they going? 200-250 people die because at that height there is less of oxygen but still people go because of blind faith. The reading from the gospel talking about hypocrisy about which Jesus has warned us seems to be very suitable. Blind faith, hypocrisy should not to be linked with faith.

AASTHA KE SAATH ANDH VISHWAAS KO NAHI JODNA HAI. JAB ANDHVISHWAAS SE JODTE HAI TO HUM PARMATMA AUR PUJA KE NAAM PAR PATHARON KI PUJA KARNE LAGTE HAI.

In Kedarnath, in the name of 'deva di dev mahadeva' people used to go to worship for 1000 years. Thousands of people went and now there are lakhs that go. This year on the 16th of July there was an earthquake that hit the area because of which 20-30 thousand people got simply buried alive under the rocks and the government could not do much about it. Those dead bodies are lying even now despite the military being involved. What had they gone to do? The military through helicopters rescued more than one lakh people. Those who could not be rescued had already died under the huge rocks. What had they gone to do in Kedarnath, Badrinath, Gangotri? They had gone on a pilgrimage. Who's pilgrimage? They had gone to worship the idol or whatever you call it. And when I ask questions people tell me why are you saying against our religious sentiments? I do not speak against anyone's religious sentiments. But I try to explain it to them with love and compassion that the parmatma has given you a body of a human being, it has given you a heart, mind and the ability to think – Discerning, Vivek and a

शेष पृष्ठ 8 पर

राजस्थान सरकार की फ़्लैगशिप योजनाएं

आमजन को मिली राहतों की सौगात

संवेदनशील, जवाबदेह और पारदर्शी शासन देने को प्रतिबद्ध राजस्थान सरकार ने आमजन का जीवन सुगम बनाने को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए फ्लैगशिप कार्यक्रम लागू किये हैं जिनके अन्तर्गत खाद्य, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आवास, शिक्षा, ऋण ब्याज मुक्ति और पशु स्वास्थ्य सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है। फ्लैगशिप योजनाएं प्रदेश के आमजन की जिन्दगी की राह को आसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री वृद्धजन सम्मान पेंशन योजना
मुख्यमंत्री एकलनारी सम्मान पेंशन योजना
मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन सम्मान पेंशन योजना

- 55 वर्ष से अधिक की महिला व 58 वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों हेतु आयु अनुसार 500 से 750 रुपये प्रतिमाह पेंशन।
- 18 वर्ष से अधिक आयु की विधवा / परित्यक्ता महिला को 500 से 750 रुपये प्रतिमाह पेंशन।
- किसी भी आयु के चयनित विशेष योग्यजन व्यक्ति को आयु अनुसार 250 से 750 रुपये प्रतिमाह पेंशन।

राजीव गांधी डिजिटल विद्यार्थी योजना

कक्षा 8वीं में दूसरे से ग्यारहवां स्थान प्राप्त करने वाले 3.5 लाख विद्यार्थियों को टेबलेट पीसी हेतु 6-6 हजार रुपये की नकद सहायता। कक्षा 10 व 12 की मेरिट के प्रथम 10-10 हजार विद्यार्थियों को 14 इंच आकार के गुणवत्ता वाले लैपटॉप

सुनवाई का अधिकार अधिनियम, 2012

आम आदमी की समस्याओं तथा अभाव अभियोगों पर उनके अपने क्षेत्र में ही एक निश्चित समय सीमा में सुनवाई का अधिकार। अब तक 12,546 प्रकरणों में से 11,100 प्रकरण निस्तारित।

मुख्यमंत्री बीपीएल जीवन रक्षा कोष, राजस्थान मुख्यमंत्री सहायता कोष

बीपीएल परिवारों के मरीजों को राजकीय चिकित्सालयों में सम्पूर्ण ईलाज निःशुल्क उपलब्ध करवाने के साथ ही, अब हृदय, कैंसर एवं किड्नी रोग का ईलाज चिन्हित निजी चिकित्सालयों में करवाने पर एक लाख रुपये तक की सहायता राशि

राजस्थान ग्रामीण सड़क विकास योजना

250 से 499 तक की आबादी वाले 2000 गांव सड़कों से जुड़ चुके हैं, शेष 1 हजार 400 गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ने का कार्य 2 चरणों में। 100 से 249 तक आबादी वाले गांवों को जोड़ने हेतु प्रथम चरण में 500 गांवों को रु. 585 करोड़ की लागत से सड़कों से जोड़ा जायेगा

मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा/जांच योजना

राजकीय अस्पतालों में आने वाले सभी रोगियों के लिये मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा योजना। 7 अप्रेल, 2013 से प्रारम्भ 'मुख्यमंत्री निःशुल्क जांच योजना' के प्रथम चरण में मेडिकल कॉलेजों से संबद्ध, जिला एवं सैटेलाइट चिकित्सालयों में ईसीजी, एक्स-रे, सोनोग्राफी एवं अन्य आवश्यक सामान्य जांचें निःशुल्क

मुख्यमंत्री ग्रामीण बीपीएल आवास योजना

10 लाख ग्रामीण गरीब परिवारों के लिए स्थायी मकान के स्वप्न को साकार करने हेतु राज्य की सबसे बड़ी योजना। अब तक 4 लाख 43 हजार पात्र बीपीएल परिवारों को आवास हेतु वित्तीय सहायता। सहायता राशि रु. 50 हजार से बढ़ाकर रु. 70 हजार प्रति इकाई की गई

मुख्यमंत्री अन्न सुरक्षा योजना

गरीबी की रेखा से नीचे गुजर कर रहे परिवारों के लिये रु. 2 प्रति किलोग्राम के स्थान पर अब रु. 1 प्रति किलोग्राम की दर से गेहूं उपलब्ध कराया जायेगा। राजब्राण्ड फोर्टीफाइड आटा रु. 8.60 से घटाकर रु. 5 प्रति किलो में उपलब्ध। चीनी की दर रु. 13.50 के स्थान पर रु. 10 प्रति किलोग्राम।

मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना

राज्य के 5.67 करोड़ पशुधन के लिये लोकप्रिय योजना। अब निःशुल्क दवाओं को 87 से बढ़ाकर 110 किया जा रहा है। सभी 288 तहसीलों में एक-एक मोबाइल पशु चिकित्सा यूनिट शीघ्र

मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति योजना

देश में पहली बार लागू ऐसी बड़ी योजना, जिसमें आर्थिक रूप से कमजोर, समाज के सभी वर्ग के परिवारों के प्रतिभाशाली रु. 1 लाख विद्यार्थियों (मेरिट के आधार पर) को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति। उच्च शिक्षा हेतु रु. 10 लाख तक का ऋण

मुख्यमंत्री शहरी बीपीएल आवास योजना

पहली बार शहरी बीपीएल के लिए अभूतपूर्व राहत। 50 हजार लाभार्थियों को सहायता राशि का वितरण किया जा रहा है। पात्र प्रति परिवार को आवास निर्माण हेतु सहायता राशि रु. 50 हजार से बढ़ाकर रु. 70 हजार प्रति इकाई की गई

राजस्थान जननी शिशु सुरक्षा योजना

योजना के अन्तर्गत गर्भवती महिलाओं को निःशुल्क संस्थागत प्रसव सुविधा । 200 नई 'जननी एक्सप्रेस'। 108 एम्बुलेंस की संख्या में 100 की बढ़ोतरी। 1 अप्रेल, 2013 से 'मुख्यमंत्री शुभ लक्ष्मी योजना' लागू। प्रदेश के समस्त जिला चिकित्सालयों में लेबर रूम का आधुनिकीकरण एवं मरम्मत का कार्य

मुख्यमंत्री कौशल विकास योजना

रोजगारपरक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत 97 प्रकार के कौशल का प्रशिक्षण देकर रोजगार दिलवाने का कार्य आरम्भ। अब पात्रता हेतु परिवारों की आय सीमा रु. 2 लाख 50 हजार की गई। 2 लाख लोगों को स्वरोजगार हेतु रोजगार किट। 10 हजार युवाओं को ड्राइविंग एवं मोटर मैकेनिक का प्रशिक्षण

अफोर्डेबल हाउसिंग पॉलिसी-2009

राज्य में निवास करने वाले निम्न आय वर्ग के परिवारों को आवासीय सुविधाएं उपलब्ध करवाने की दृष्टि से अफोर्डेबल हाउसिंग पॉलिसी-2009 लागू की गई है जिसके अन्तर्गत वर्ष 2013-14 तक कुल 5 लाख आवास निर्मित करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 2012-13 में अब तक 29,894 आवासों का निर्माण कार्य पूर्ण

राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान करने की गारंटी अधिनियम, 2011

नवम्बर, 2011 से लागू अधिनियम जो जनता से जुड़े 18 विभागों की 153 सेवाओं को समयबद्ध व पारदर्शी रूप से उपलब्ध कराने की गारंटी देता है। अब तक 1 करोड़ 26 लाख प्रकरण में सेवायें प्रदान। लोक सेवा निदेशालय का गठन कर क्रियाशील किया गया। एकीकृत कॉल सेन्टर की स्थापना जल्द की जा रही है

मुख्यमंत्री ब्याज मुक्त फसली ऋण योजना

काश्तकारों द्वारा समय पर ऋण चुकाने पर सहकारी बैंकों के एक लाख रुपये तक के फसली ऋण को ब्याज मुक्त करने के लिए राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष लगभग 262.5 करोड़ रुपये का अनुदान । इस फसली मौसम में लगभग 10,500 करोड़ रुपये का ऋण 26 लाख काश्तकारों को उपलब्ध करवाया जा रहा है।

मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक सम्बल योजना

राज्य के सहकारी दुग्ध उत्पादक संघों में दूध की आपूर्ति करने वाले पशुपालकों को अब राज्य सरकार द्वारा 2 रुपये प्रति लीटर की दर से अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा। 75 करोड़ लीटर दुग्ध उत्पादन के परिप्रेक्ष्य में इस योजना पर वार्षिक 150 करोड़ रुपये का व्यय भार आएगा। मुख्यमंत्री दुग्ध उत्पादक सम्बल योजना के अन्तर्गत दो माह में 23.14 करोड़ रुपये का अनुदान प्रदान किया।

राजस्थान विशेष आवास योजना

यह योजना प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित तथा सामाजिक दंगों आदि से प्रभावित लोगों के पुनर्वास हेतु 31 अगस्त, 2012 से लागू की गई, जिसके तहत क्षतिग्रस्त मकान हेतु 55,000 रुपये (शौचालय के निर्माण सहित) एवं मरम्मत हेतु 25,000 रुपये की सहायता देय है। यह योजना ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू की गई है। इस योजनान्तर्गत नये निर्माण एवं क्षतिग्रस्त मकानों की मरम्मत हेतु अब तक 3018 मामलों के लिए 7 करोड़ रुपये वितरित किए गए।

राजस्थान संवाद/जेपीसी

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग राजस्थान सरकार

President's Message

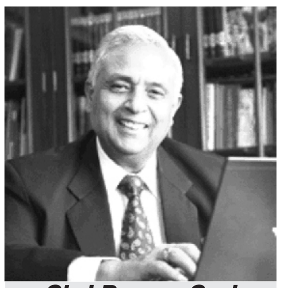

Shri Punam Suri
President, DAV CMC

DAV has been making a significant contribution to the society through spreading value-based education keeping the ancient Vedic heritage in mind. In fact, it is the only organization which has set high standards in education while maintaining a balance between Vedic wisdom and modernity.

The organization runs and manages over 720 educational institutions comprising of public schools, grants-in-aid schools, colleges, institutes of professional education and research institutions all over India and abroad. Recently, the organization has taken one step forward by initiating the project of DAV University at Jalandhar, Punjab.

Presently, DAV has taken some crucial steps in its pursuit of excellence. Some of these are: Modernization of infrastructure in schools and colleges, Introducing technology in teaching-learning process, Creating a network of people all over the globe through Alumni Foundation, Strengthening Vedic virtues, etc.

While DAV feels proud of its achievements, it is yet not contented. Its vision is to be crowned as the finest educational organization in the world. Its mission is man-making, dispelling knowledge and building Vedic values. Our success in this endeavor has the potential of making our society free from prejudices and vices.

We, the members of DAV fraternity, believe that the best way to bring a change is to initiate it. With this belief, we have continually engaged over more than 125 years in a relentless endeavor to grow and develop into a pioneer organization in the field of education.

पृष्ठ–6 का शेष

brain to think. These have all been given by the parmatma. If with our brains we do not think, reason or be rational then where ever we go in the name of god and to worship god what will happen is that we will die. The shivalinga in Kedarnath is still under the huge rocks with dead bodies all around. He could not save himself. The one that everybody's calls god, whom we worship could not save himself and this forces us to think about his credibility. A few days back we saw in our country the anti superstition crusader called Dr Narendra Dabolkar in Satara near Pune. He along with his kids and a team were crusading against all forms of superstitious mongering and miracle mongering and all these groups of god men and god women. Since they were fighting against superstitions they of course developed enemies who shot him down. They gunned him down dead one fine morning when he was talking a morning walk. They thought that they will kill him and the movement will stop. But if they kill one Narendra Dabolkar thousands and thousands will be born. This war is going on in the whole world. You can kill Galileo but Galileo never dies. Woh amar ho jata hai. We have to inculcate a strong spirit in today's world in which people like Asharam Bapuji have become gurus and are raping the belief and faith of the people. A 16 year old girl was brought forcefully from her gurukul in Maharashtra to his ashram in Jodhpur where the hostel warden took the girl to the guru saying that Guruji will give her a Mantra to cure her problems. And that little girl was perfectly all right. She had no physical or mental problem. She was forcefully brought from her gurukul and asharam played with her violating her sexual rights for more than an hour. She kept shouting and crying and he pressed her mouth to shut her up. This is what the god man, asharam of today has done. He has been charged under section 376 along with a lot others and his followers are getting restless to get him out of the jail. But the Rajasthan government along with the entire country has condemned what the guru has done as an absolutely heinous crime of raping a minor. He will be punished. His request for bail has also been rejected by the court. He has been threatening everyone. We need to talk about this issue because it tells us a lot about the age and time we are living in. The age and time that celebrates science and technology all around us. We see internet and mobile phone all around us. We say that we are living in an age of rationality and reason. However, it is also in today's world that crores of people are following so many god men and god women. The challenge before us then is to decide on the fact that whether we are going to be the followers of such god men or god women or are we going to follow ourselves?

HUMARA AATMA, BUDDHI, VIVEK HUME JO KAHE HUME WOH KARNA HAI. AAPKO YEH FAISLA KARNA HAI.AAP KISI KO BHI MORTGAGE KAR DENGE, APNA VIVEK, BUDDHI AUR KISI KO BHI GURU MAAN LENGE KOI HUMAN BEING AAP JAISE HI TOH AAP BAHUT BADE KHATRE ME PAD JAYENGE. KISI KO BHI GURU NAHI MAANANA.

The simple message that I want to convey to my young friends is that be your own guru. Be your own prophet and write your own little piece of scripture. Read all the wonderful scriptures and one fine day sit down and write your own scripture on a piece of paper. Write not more than Ten Commandments for yourself. Listen to everyone, read everything but then make your own commandments. Read them every day. What are the values you have decided to inculcate in yourself. Since you are the one making these values and no one forces you, these values should come into your life. This is your own voluntary choice. That is the best way to grow from inside to evolve from inside. There will be greater benefit. Your life would lead towards more of truth, love, compassion, justice. You will commit yourself to these values for life long. These are other names of god. Gandhi said when he was beginning his fight in South Africa that god is truth. When he reached the peak of his fight in India he said that he realized that truth is the only god. In that sense in order to pursue truth in your life you need to evolve yourself through truth and reasoning by which I mean analytical reasoning. The best way for young people and students like you is the three Ds. This is what I got from the movement called the Arya Samaj and from my teacher Swami Dayanand Saraswati, founder of Arya Samaj. I want to share the three Ds. First, is to Doubt, skepticism. Second is to debate. Third is the most important if necessary in life if you feel it strongly then dissent, if need be stand alone. Asharam workers entered my office in 7 Jantar mantar road 4 days back and threatened me with my life. The police had to be called to chase them away otherwise they could have done anything to me. I called a few from that crowd and asked them to talk to me. To which one replied saying that I call them 'Bhed Bakri'. I asked them what is bhed? Bhed is anyone that follows the crowd mindlessly. Bhed is bheed. Anyone who thinks with his or her own mind can never be a crowd follower or a bheed. Apne vivek se tay kare. The three Ds should be the guiding stars of your life. Truth should never be compromised. Raise questions and then debate and then if you don't agree then dissent. This is your autonomy. Don't mortgage it. I would like to leave all of us with this thought and end this discussion.

आसाराम : खुद को संतों के संत सिद्ध करें

- डॉ. वेदप्रताप वैदिक

संतों और संन्यासियों के प्रति जिनके दिल में ज़रा भी सम्मान हो, उन्हें आसाराम जैसे बापुओं की दुर्गति देखकर कितना कष्ट होगा। जो लोग स्वयं सच्चे संत, महात्मा और संन्यासी हैं, उनके दुख की तो कोई सीमा ही नहीं है। हमारे भावुक और सतही बुद्धि वाले नेता, जो इन कथावाचक धंधेबाजों के आगे मत्था टेकते रहे हैं, वे अब अपना माथा ठोक रहे हैं। सबसे ज्यादा मरण तो उन अंधभक्तों की है, जो इन आध्यात्मिक मसखरों के चक्कर में पड़कर अपनी गाढ़ी कमाई का पैसा ही नहीं, अपनी बहन-बेटियों तक को इनके हवाले करने को तैयार हो जाते हैं। इटली के विख्यात विचारक निकोलो मेकियावेली का यह कथन आज कितना सटीक बैठ रहा है कि जब तक दुनिया में लोग ठगे जाने के लिए सहर्ष तैयार होंगे तब तक ठगों की कभी कमी नहीं होगी। आसाराम जैसे लोग बंदूक के जोर पर लोगों से पैसा नहीं ऐंठते हैं, हत्या की धमकी देकर लड़के और लड़कियों को अपने कमरे में नहीं बुलाते हैं, किसी की डकैती और चोरी नहीं करते हैं। भोले और स्वार्थी लोग खुद आकर उनके जाल में फंसते हैं। ऐसे 'संत' लोग बल-प्रयोग नहीं करते, छल-प्रयोग करते हैं। इसीलिए उनके द्वारा किए गए किसी कुकर्म को आप 'बलात्कार' कैसे कह सकते हैं?वह 'बलात्कार' नहीं, छलात्कार है।

छलात्कार के शिकार के प्रति भी समाज की सहानुभूति होती है। शिकार-विशेष के साथ 'बलात्कार' भी हो सकता है। लेकिन बलात्कार से भी भयानक और जघन्य अपराध है, छलात्कार! छलात्कारी का जाल काफी ज्यादा चौड़ा और आकर्षक होता है। बलात्कार या ठगी करने वाला सीधा अपराध करता है और जेल चला जाता है या गायब हो जाता है लेकिन छलात्कारी अपना जाल बिछाने के पहले अपनी सेवा-दहल कई ब्रह्मचारियों और ब्रह्मचारिणियों से करवाता है, खुद भगवा या धवल चोंगों से भेस बनाता है, अपनी प्रामाणिकता का सिक्का जमाने के लिए वेद, पुराण और गीता तक को झोंक देता है और मोक्ष को चटनी की तरह बांटने की मुद्रा धारण किए रहता है। लेकिन अपने ही बिछाए जाल में जब वह फंस जाता है तो साधारण अपराधियों की तरह अपना अपराध कुबूल करने की बजाय वह चोरी और सीनाजोरी करता है।

आसाराम तो अपने बड़बोले और हमलावर तेवर के लिए कुख्यात हैं। लेकिन इस मामले में वे सीनाजोरी तो क्या, मुंहजोरी भी ठीक से नहीं कर पा रहे हैं। घिघिया रहे हैं। बलात्कार सिद्ध करने वाले को पांच लाख रुपये देने की घोषणा कर रहे हैं। क्या मुंह दबाना और सिर्फ हाथ फेरना बलात्कार है, वह यह पूछ रहे हैं?वे सोनिया और राहुल का नाम भी घसीट रहे हैं। हद हो गई। देश की सबसे बड़ी पार्टी के नेताओं को क्या पड़ी है कि एक धंधेबाज़ मदारी के पीछे हाथ धोकर पड़ जाएं?बाबा रामदेव से अपनी तुलना करना आसाराम के बौद्धिक दिवालियेपन का सबूत है। जिन अन्य नेताओं ने इस संत के प्रति सज्जनतावश सहानुभूति प्रकट कर दी, अब उनकी पार्टियों ने उन्हें सावधान कर दिया है। लाख कोशिश करने पर भी इस मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं हो सकता। जो करेगा, वह मरेगा। जनता उसे माफ नहीं करेगी।

इस मामले ने आसाराम को अंदर से हिलाकर रख दिया है। पुलिस की गिरफ्त से बचने के लिए वे एक जगह से दूसरी जगह भागे-भागे फिर रहे हैं। यदि वे ज़रा भी आध्यात्मिक होते तो वे पुलिस और कानून का मुकाबला वैसे ही करते जैसे कि सुकरात ने किया था। सुकरात को रातों रात एथेन्स से फरार करने के लिए एक भक्त ने जहाज भी लगवा दिया था लेकिन उसे तो विश्व-इतिहास में अमर होना था। सुकरात चाहता तो वह रातों-रात एथेन्स से इतनी दूर भाग जाता कि उसे पकड़ पाना ही मुश्किल हो जाता। उसकी जान तो बच जाती लेकिन सुकरात खत्म हो जाता। क्या ऐसा व्यक्ति संत कहलाने का अधिकारी है, जो जेल जाने के डर से कहता है कि मुझे जेल में कोई ऐसी चीज़ न खिला दी जाए कि मैं पागल हो जाऊं! आप पागल हो गए तो आप यों ही बरी हो जाएंगे।

जरुरी यह है कि आप सचमुच पागल हो जाएं। बुद्धिमान न बनें। चतुराई न दिखाएं! सच्ची संतई दिखाएं। यदि आपने जुर्म किया है तो उसे साफ़-साफ़ स्वीकार करें और अदालत से वह सजा मांगें, जो बलात्कार के लिए आज तक किसी को न मिली हो। संसद में कोई क्यों कहे कि आसाराम को फांसी पर लटकाओ। आसाराम खुद कहे कि मुझे लाल किले या विजय चौक पर फांसी दो और मेरी लाश को कुत्तों से नुचवा डालो। उस लाश के अंतिम संस्कार की भी जरुरत नहीं। इस दृश्य को सभी टीवी चैनलों पर भी प्रसारित किया जाए। सारा राष्ट्र आसाराम के 'कुकर्म' से शर्मिंदा जरुर होगा लेकिन उनकी सत्यनिष्ठा और निर्भीकता पर फिदा हो जाएगा। वे सभी संभावित छलात्कारियों और बलात्कारियों के लिए जिंदा सबक बन जाएंगे। वे संतों के संत कहलाएंगें।

अपने आपको बुद्ध या नानक कहलवाने की कोशिश को लोग बचकाना तो मान ही रहे हैं, इन महापुरुषों का अपमान भी मान रहे हैं। खुद को जेल से बचाने के लिए आप इन महापुरुषों को भी अपने कीचड़ में क्यों सान रहे हैं। भारत सरकार, देश के प्रमुख नेताओं और इन महापुरुषों को अपने कीचड़ में घसीटे बिना भी आप मुकदमा जीत सकते हैं। मुकदमा जीतना कोई बड़ी बात नहीं है। आप 'पीड़िता' या उसके परिवार को बर्गला सकते हैं, मेडिकल रपट या पुलिस रपट को उलट-पुलट सकते हैं, न्याय की गोटियां भी आगे-पीछे सरका सकते हैं और जांच को भी आंच के हवाले कर सकते हैं, जैसा कि बोफोर्स के मुकदमे में हुआ था। याद रखें कि अदालत ने तो बोफोर्स को बख्श दिया लेकिन उस आरोप भर ने ही देश के सबसे ज्यादा सीटों से जीतनेवाले प्रधानमंत्री को इतिहास के कूड़ेदान में बिठा दिया। किसी भी नेता के मुकाबले हमारे देश में सच्चे संत का स्थान कहीं अधिक ऊंचा होता है। उस पर मुकदमा चलना और जेल जाना तो बहुत दूर की बात है, उस पर दुश्चारित्र्य का आरोप लगना ही मृत्युदंड से बड़ी सजा है। पता नहीं, आसाराम इस सजा को कैसे काटेंगे?

- 242, सेक्टर 55, गुड़गांव-122011,
फोन : 0091-0124-405-7295
मो. 98-9171-1947
e-mail : dr.vaidik@gmail.com

'भजन-भास्कर' पुस्तक का विमोचन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. चन्द्रभान आर्य (सम्पादक शांतिधर्मी) की पुस्तक 'भजन-भास्कर' का विमोचन जिला वेद प्रचार मण्डल जींद द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम में किया गया। ज्ञातव्य है कि इस पुस्तक का प्रकाशन हरियाणा साहित्य अकादमी के सहयोग से हुआ है। हरियाणा के इतिहास में यह पहला अवसर है जब किसी आर्य भजनोपदेशक की पुस्तक के लिए हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा अनुदान दिया गया है। यह समस्त आर्यजगत् के लिए गर्व का विषय है। पं. चन्द्रभान आर्य 1951 से भजनोपदेशक के रूप में और 1998 ई0 से शांतिधर्मी के संपादक व प्रकाशक के रूप में आर्यजगत् की सेवा कर रहे हैं।

- सहदेव समर्पित

पृष्ठ-5 का शेष

वहाबियत की असलियत

सिलसिले के दरवाजे न सिर्फ खोले बल्कि उनको बराबर का दर्जा दिया था, वहीं दूसरी तरफ वहाबी इस्लाम ने औरतों को जिंदा दफन करना शुरू कर दिया। बेपर्दगी के नाम पर औरतों के चेहरों के हिस्से बदनुमा करने और औरतों पर व्यभिचार का इल्जाम लगा कर उन पर संगसारी करके मार देने को इस्लामी रवायत बना दिया। वहाबियत पर विश्वास न रखने वाले मुसलमानों को इस्लाम के दायरे से खारिज करके उन्हें सरेआम कत्ल करना जायज और हलाल बताया जाने लगा। यह मात्र इस्लाम के अनुयायियों के साथ सलूक की बात है। अन्य धर्मों पर कुफ्र का इल्जाम लगा कर उन्हें खत्म करना, संपत्ति लूटना, उनकी औरतों को जबर्दस्ती वहाबियत पर धर्मांतरण करवाना इनके लिए एक आम बात बन चुकी है।

वहाबियत या वहाबी इस्लाम लगातार पूरी दुनिया के लिए खतरा बनता जा रहा है। मौत के इन सौदागरों की करतूत को आमतौर पर इस्लामी आतंकवाद का नाम दिया जाता है, जिसकी साजिश वाशिंगटन और लंदन में रची जाती है और कार्यनीति सऊदी अरब से लेकर दक्षिण एशिया तक तैयार की जाती है। अल-कायदा, तालिबान, सिपाह-ए-सहबा, जमात-उद-दावा, अल-खिदमत फाउंडेशन, जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा जैसे संगठन इस साजिश को अंजाम देकर लगातार खूनी खेल खेल रहे हैं।

दक्षिण एशिया में वहाबी इस्लाम की जड़ों को मजबूत करने का काम मौलाना मौदूदी ने अंजाम दिया। हकूमत-ए-इलाहिया इसी साजिश का हिस्सा है जिसके तहत गैर-वहाबी आस्थाओं को, चाहे वह इस्लाम के अंदर की आस्थाएं हों या गैर-इस्लामी, जड़ से उखाड़ फेंकने और उनकी जगह एक ऐसा निजाम खड़ा करने की योजना है जिसमें हिटलर जैसा वहाबी परचम लहराया जा सके। किससे छिपा है कि सऊदी अरब का हर कदम अमेरिका की जानकारी में उठता है। क्या अमेरिका को इसका इल्म नहीं कि सऊदी अरब अपने देश से लेकर पाकिस्तान और बांग्लादेश तक इन संगठनों की तमाम तरह से मदद कर रहा है और इसकी छाया हिंदुस्तान पर भी मंडरा रही है।

आज की वहाबी आस्था के पास केवल तलवार और राइफलें नहीं हैं बल्कि इनके हाथों बेहद खतरनाक आधुनिकतम हथियार लग चुके हैं। इनकी नजरें पाकिस्तान में मौजूद परमाणु हथियारों पर भी हैं। आस्था जब पागलपन बन जाए तो वह तमाम हदें पार कर सकती है। जो लोग ईद के दिन मस्जिदों में घुसकर लाशों के अंबार लगा सकते हैं वे मौका मिलने पर क्या कुछ नहीं कर गुजर सकते। वहाबियत का खतरा इस संदर्भ में देखा जाना चाहिए। इस खतरे की चपेट में हर वह शख्स है जो इस दरिंदगी के खिलाफ खड़ा है।

E-mail : khurshidharmony@gmail.com

– जनसत्ता से साभार

योगिराज श्री कृष्ण जयन्ती समारोह
चिरंजीवी राष्ट्र की रक्षा करना ही श्री कृष्ण की प्रेरणा है

सौभाग्य है कि राम और कृष्ण की संस्कृति हमें विरासत में मिली हुई है, जिसकी रक्षा का संकल्प लेते हुए आतंकवाद मुक्त भारत की संकल्पना साकार करनी होगी, श्रीकृष्ण ने अपने समय के दुर्दान्त आततायियों का मर्दन किया था, आज विषधारी आतंकियों का समूल नाश करके चिरंजीवी राष्ट्र की रक्षा करना ही श्रीकृष्ण की प्रेरणा है, उक्त विचार काशी आर्य समाज में आयोजित श्री कृष्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर बुधवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश भारती ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये।

आर्य विद्वान पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि योगिराज श्री कृष्ण भगवन्ता को उपलब्ध थे, गीता हमारी चिंतनधारी की थाती है उसके प्रकाश से ही विश्व का अंधकार दूर होगा, श्री कृष्ण सृजनहार और धर्म के महान सूत्रधार हैं।

आर्य विदुषी डॉ. गायत्री आर्या ने कहा कि पुराणकारों द्वारा भगवान कृष्ण के चरित्र को लांछित करने का कुप्रयास किया गया परन्तु वेदोद्धारक दयानन्द ने श्रीकृष्ण की महानता का हमें बोध कराया।

जिला मद्य निषेध अधिकारी श्री अरूणेश कुमार सिंह ने बतलाया कि जन-मानस में श्री कृष्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ प्रतिष्ठित हैं, श्रीकृष्ण के जीवन वृत्त से प्रेरणा ग्रहण कर भारत पुनः गौरव के शिखर पर पहुँच सकता है।

पूर्व सभासद लीलाराम सचदेवा ने कहा कि श्री कृष्ण ने आत्म तत्व का बोध कराया तथा नित्य और अनित्य वस्तुओं में भेद करने का संदेश दिया।

अध्यक्षीय सम्बोधन में आर्य समाज के प्रधान श्री श्रीनाथ सिंह पटेल ने बतलाया कि योगिराज श्री कृष्ण का विचार तत्व, गीता दर्शन तथा महाभारत में उनकी भूमिका इस राष्ट्र की अमूल्य निधि है। श्री कृष्ण और उनका दर्शन सदैव प्रासंगिक रहेगा।

समारोह में सर्वश्री प्रकाश नारायण शास्त्री, डॉ. विशाल सिंह, लालचन्द्र आर्य, एस. एन. प्रसाद, कु. सत्य निष्ठज्ञ आर्य, राधेश्याम आर्य, मोतीलाल आर्य, डॉ. काशीनाथ, ब्रजभूषण सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये, आर्य गायक रमेश जी आर्य तथा श्री मोती लाल आर्य ने श्री कृष्ण की महानता के भजन सुनाये। श्री गौतम चन्द्र अरोड़ा "सरस" ने "वेद गीत" प्रस्तुत किया।

उपस्थित लोगों का स्वागत डॉ. विशाल सिंह यादव कोषाध्यक्ष ने संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री, धन्यवाद, श्री संजय सिंह एडवोकेट ने दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री मोती लाल आर्य, डॉ. काशीनाथ, पं. ज्ञान प्रकाश आर्य के पौरोहित्य एवं संयोजन में सम्पन्न वैदिक यज्ञ से हुआ।

– प्रकाश नारायण शास्त्री, मन्त्री, आर्य समाज मार्ग बुलानाला, वाराणसी-221001

पेड़ों की रक्षा के लिए रिश्तों की डोर

– दिनेश मानसेरा

रक्षा बन्धन का महत्त्व भाई बहन के रिश्ते की पवित्र डोर से बंधा है, बहन-भाई आपस में सुख-दुख में एक दूसरे का साथ निभायें, इस पर्व के पीछे मूल भाव यही था। यही भाव उत्तराखण्ड में 'चिपको आन्दोलन' के साथ जुड़ा इस आन्दोलन में महिलाओं ने अपने पास के पेड़ों को अपना भाई मानकर उनको रक्षा सूत्र यानी राखी बांधी और उनकी रक्षा के संरक्षण का संकल्प लिया। इसी संकल्प की बदौलत ही उत्तराखण्ड ही नहीं बल्कि पूर्वोत्तर भारत में वनों की रक्षा हो सकी। चिपको आंदोलन में उत्तराखण्ड की महिलाओं ने हरे भरे पेड़ों को बचाने के लिए खुद को पेड़ों से चिपका लिया। साठ-सत्तर दशक का ये दौर वन माफियाओं, जंगलों की ठेकेदारों और सरकार की वन नीतियों के खिलाफ संघर्ष का दौर था। उस दौरान पहाड़ी क्षेत्रों में हजारों पेड़ रोजाना काटे जा रहे थे, जिससे हिमालय का ही नहीं अपितु पूरे उत्तर भारत का पर्यावरण प्रभावित हो रहा था।

चिपको आन्दोलन सुंदरलाल बहुगुणा, चंडी प्रसाद भट्ट, सच्चिदानन्द भारती, गौरा देवी के नेतृत्व में शुरू हुआ था। मार्च, 26, 1974 को इस आन्दोलन की जब शुरुआत हुई तो इसकी ताकत बनीं उत्तराखण्ड की महिलाएँ, जिन्हें अपने पेड़ों से, अपने जंगलों से बेहद लगाव था, उनके साथ एक पारिवारिक रिश्ता था। उत्तराखण्ड के चमोली जिले से शुरू हुआ ये आंदोलन धीरे-धीरे सभी पहाड़ी राज्यों में फैल गया। जन जागरूकता के चलते इस आंदोलन ने दुनिया भर में ख्याति अर्जित की, दुनिया भर में 'रक्षा सूत्र' से लोगों का जुड़ाव हुआ। इस गाँधीवादी आंदोलन को दूसरे सत्याग्रह का भी नाम दिया गया।

पेड़ों की रक्षा का महत्त्व महिलाएँ इसलिए ज्यादा समझती हैं क्योंकि जंगल उनके पालतू मवेशियों को चारा देता था, गाँव के स्रोत को पानी देता था, हकों के जरिए उन्हें जलाऊ लकड़ी भी देता था, महिलाएँ ये भी जानती थीं कि हरे भरे पेड़ों की बदौलत ही उन्हें स्वच्छ हवा, मानसून की बारिश, उत्तर भारत को जल देने वाली नदियों का बारहमासी प्रवाह मिलता है। चिपको आन्दोलन में

पेड़ों को रक्षा सूत्र बांध कर उनकी रक्षा संरक्षण का संकल्प व्यर्थ नहीं गया। चिपको आन्दोलन एक जागरूकता का आंदोलन बना, इसी आंदोलन के बाद से केन्द्र व राज्य सरकारों को अपनी जंगल सम्बन्धी नीति में बदलाव करने पड़े। लम्बे संघर्ष के बाद वन अधिनियम 1982 सामने आया, साथ ही साथ उत्तराखण्ड में तमाम आरक्षित वनों की स्थापना हुई, हिमालय-शिवालिक की पहाड़ियों के अलावा उत्तराखण्ड के भाबर-तराई क्षेत्रों में भी आरक्षित वन बना दिये गये। ये उत्तराखण्ड की महिलाओं का संकल्प ही था कि उन्हें अपने भाई रूपी पेड़ों की रक्षा करनी है। आम तौर पर मान्यता ये है कि भाई अपनी बहन की रक्षा करते हैं, लेकिन यहाँ बहन ने भाई को जीवन दिया, बदले में भाई ने बहन को सालों साल बहुत कुछ देने का मौनव्रत लिया। ऐसी मिसाल दुनिया में और कहीं नहीं मिलेगी, एक ऐसा रिश्ता जो सदियों तक पीढ़ी दर पीढ़ी चलेगा। प्यार का रिश्ता स्नेह का रिश्ता।

– पांचजन्य से साभार

स्वतंत्रता सेनानी श्री हरिसिंह जी की पुण्यतिथि पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन

स्वतंत्रता सेनानी श्री हिरिसिंह जी आर्य की छठी पुण्यतिथि पर दिनांक 1 सितम्बर 2013 (रविवार) को स्वामी सेवानन्द सरस्वती वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास, जयपुर की ओर से छात्र-छात्राओं की वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में जयपुर और अजमेर शहर की बीस शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का आयोजन दो वर्गों में किया गया। प्रथम वर्ग में कक्षा 5 से कक्षा 8 तक के विद्यार्थी, विषय – 'तीर्थ यात्राएँ धार्मिकता का प्रमाण है?'और द्वितीय वर्ग में कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थी, विषय – 'भ्रष्टाचार देश की सबसे बड़ी समस्या है?' दोनों वर्गों में कुल 42 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम श्री एम.एल. गोयल, निदेशक डी.ए.वी शिक्षण संस्थाऐं, राजस्थान एवं पूर्व शिक्षा परामर्शदाता, बिनानी सीमेंट लिमिटेड बिनानीग्राम (सिरोही) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि माननीय श्री सत्यव्रत सामवेदी, कार्यकारी अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली एवं प्रधान आर्यसमाज आदर्श नगर, जयपुर, उपस्थित थे। कार्यक्रम में डॉ. सुभाष वेदालंकार, डॉ. रामपाल शास्त्री, डॉ. मदन मोहन जावलिया, और श्रीमती अरुणा देवडा, रावत मिष्ठान भंडार जयपुर-जोधपुर और जयपुर शहर के गणमान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त आर्यसमाज के पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम संयोजिका श्रीमती सरोज आर्या ने अवगत कराया कि दोनों वर्गों की प्रतिभागियों में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेता प्रतिभागियों को क्रमशः श्रीमती अरुणा देवड़ा ने ३१००/रु, श्री अशोक शर्मा, मंत्री मोती कटला ने 2100/रु, श्री शंकर लाल शर्मा, उपप्रधान आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार ने 1100/रु और द्वितीय श्रेणी में श्रीमती शकुन्तला खत्री ने 3100/रु, श्री मंयक भारती/ डॉ. हेमलता भारती ने 2100/रु, श्री ओम्प्रकाश झालानी, आर्यसमाज बगरु ने ११००/रु का नकद पारितोषिक प्रदान किया। इस अवसर पर श्रीमती मधुर भाषणी कपूर ने स्वतंत्रता सेनानी के जीवन के प्रेरक संस्मरणों को सबके सम्मुख रखा। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सरोज आर्या कोषाध्यक्ष न्यास ने किया।

कार्यक्रम के अन्त में श्री एम.एल.गोयल साहब के अध्यक्षीय उद्बोधन के पश्चात् न्यास मंत्री श्री ओ.पी.वर्मा ने सभी कार्यक्रम सहयोगियों एवं प्रेरकों को और आगुन्तक महानुभावों का धन्यवाद प्रेषित किया। अन्त मे शांतिपाठ, उद्घोष के बाद सभी ने ऋषि लंगर का आनन्द लिया।

– श्री ओम् प्रकाश वर्मा, मंत्री, स्वामी सेवानन्द वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार न्यास जयपुर

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

साम्प्रदायिक ताकतों का मुकाबला कैसे हो?

कोई भी झगड़ा-फसाद अचानक नहीं होता है। कारण चाहे चुनाव का आगमन हो या फिर कोई धार्मिक उन्माद। हम कैसे कह सकते है कि सरकार का ईज़ारा न था। धार्मिक उन्माद तो एक बड़ा मुद्दा है ही, जो हमें स्वतंत्र होते ही विरासत में ही मिल गया था। आधुनिकता का दम्भ भरने वाले हम भारतीय कब किन जातियों में बँट जाते हैं। समझ में तब आता है जब हाथ से बात निकल जाती है। स्वयं से प्रश्न करें कि क्या हम भी इक्कीसवीं शताब्दी में जी रहे हैं। देव भूमि कहलाने वाला उत्तराखण्ड सदैव दो जातियों (क्षत्रिय व ब्राह्मण) में बँटा सा नज़र आता है। इस पवित्र प्रदेश में इतना जातिवाद है कि भगवान भरोसे। सभी राजनैतिक पार्टियाँ तो किसी न किसी रूप में जातिवाद से ग्रसित हैं ही, सभ्य समाज का तथा कथित सामाजिक ढ़ाँचा भी इस जातिवाद के कारण चरमराया हुआ है। कई बार अफसोस से कहना पड़ता है कि वैचारिक रूप से इतने सुदृढ़ होते हुए भी, वर्ण व्यवस्था जो कि कर्मणा होती है लेकिन जन्मना ही व्यवहारिक है, का ही पक्ष लेते हैं।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश की दशा आज धार्मिक उन्माद की चपेट में आने के कारण बहुत ही खराब है। एक विशेष समुदाय को क्षति पहुँचाने में दूसरा समुदाय कहीं भी पीछे नहीं है। बहुत योजनाबद्ध तरीके से हमलों को अन्जाम दिया जा रहा है। कोई भी इन्हें समझाने का जिम्मा नहीं ले रहा है, हालत बद से बदत्तर होती जा रही हैं। सत्य यह है कि मृत्यु तो मानवता की ही होती है-मानव की नैतिक जिम्मेदारी तो कहीं खो गयी है। समस्या तो सामने है, परन्तु समाधान नहीं मिल रहा है। जब तक विश्व का मानव, जाति-पाति तथा धर्म आदि की संकीर्णता से ऊपर उठकर विचार नहीं करता तब तक मानव को ढूढ़ना कठिन है। कोई काले-गोरे के चक्कर में पड़ कर दुराग्रही हो रहा है तो कोई भौगोलिक सीमाओं को मुद्दा बना कर लड़ मर रहा है। पूरा का पूरा देश भयानक विस्फोट की स्थिति में आ चुका हैं, पर खेवनहार चुप्पी साधे बैठे हैं। कोई दिशा देने वाला व्यक्तित्व दूर-दूर तक नहीं दिख रहा है।

साम्प्रदायिक का ज़हर फैलाने वाले लोग कोई मौका नहीं चूकते उन्हें अपने स्वार्थ साधने से फुरसत कहाँ हैं?कि जो आज तुम्हारे उकसाने पर एक दूसरे को मार रहे हैं, कल जब आँख खुलेगी तो निशाना तुम्हारे सिवाय बचेगा कहाँ?जिन ताकतों को आज वैमनस्यता का ज़हर पिला कर पाला जा रहा है। उन्हें तो काटने की आदत पड़ चुकी। फिर कौन दुश्मन कौन दोस्त! काम तो सिर्फ तोड़-फोड़ का ही बाकी रह जाएगा। कहीं पहुँच कर तो रूकना ही पड़ेगा तब ही तो अन्दर छिपा मानव मिल सकेगा। अभी तो बाहरी ताकतों से प्रभावित होकर उछलते हैं भीतरी ताकत का जागरण करो, तब स्थिति समझ में आएगी। पकड़ में भी तब ही आएगा जब यह उन्माद एक-एक मानव अपनी आन्तरिक-शक्ति का उद्बोधन करें और समग्रता में विश्वास कर वैज्ञानिक रूप से मान्य विद्वानों को सामने रखें, तब ही होगा एक अखण्ड मानव की ताकत का पुनर्जन्म। उस ताकत के बलबूते पर सभी प्रकार की हिंसा जो कि साम्प्रदायिकता से प्रेरित होती है का मुकाबला हो सकता है।

- कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली
e-mail : balaindu181@gmail.com

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

'स्वागत योग्य हैं श्री तरुण विजय जी के ये विचार'

'वैदिक सार्वदेशिक' पत्रिका के (5–11 सितम्बर 2013) अंक में मान्य श्री तरुण विजय जी का एक पठनीय लेख 'ईंट–पत्थर गारे से बने देवताओं ने हमारे मन–मस्तिष्क को भी ईंट–पत्थर का बना दिया' प्रकाशित हुआ है । इस लेख में हिन्दू समाज के कल्याण हेतु उन्होंने कई विचारणीय बातों का उल्लेख किया है । अपने लेख में उन्होंने आर्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द को भी एक स्थान पर स्मरण किया है। मगर दयानन्द के सम्बन्ध में अपनी बात लिखने में वे एक भूल कर गये हैं,

ऐसा मुझे प्रतीत होता है। उन्होंने लिखा है कि – ऋषि दयानन्द ने ईसाई और इस्लामी हमलों और मतान्तरण से हिन्दुओं को बचाने के लिए पाखण्ड खण्डिनी पताका उठाई थी। मगर सत्य यह है कि ऋषि दयानन्द ने 1867 ई० के हरद्वारीय कुम्भ मेले में अपनी 'पाखण्ड खण्डन पताका' लगाई थी। उन्होंने इसे पौराणिक धर्माचार्यों, साम्प्रदायिक आचार्यों, गुरुओं तथा जन सामान्य को अन्धविश्वास, गुरुडम, अवैज्ञानिक मान्यताएं, व्यर्थ के कर्मकांड, जन्मना जातिवाद, एवं अन्ध रूढ़ियों से विमुक्त करने के लिए, और उन्हें सत्य सनातन वैदिक धर्म की ओर प्रेरित करने के लिए लगाई थी। दयानन्द चाहते थे कि आजकल जिन्हें 'हिन्दू' कहा जाता है, वह वेदोक्त सत्यों को, विवेक सम्मत आर्ष मंतव्यों को अपने जीवन में यथोचित स्थान दे और स्वस्थ एवं प्रगतिशील जीवन पद्धति के वैदिक सुपथ का पथिक बने। इस प्रकार से देशवासियों को सर्वांगीण उन्नत करने की दृष्टि से ही उन्होंने वहां 'पाखण्ड खण्डन पताका' लगाई थी – ईसाई और इस्लामी ताकतों से लडने के उद्देश्य से वह पताका नहीं उठाई थी। वे प्रथम अपने घर को ठीक करने में विश्वास रखते थे।

श्री तरुण विजय जी ने अपने लेख में हमारे मन्दिरों एवं (तथाकथित) तीर्थों की शोचनीय दशा पर भी चिन्ता व्यक्त की है। काशी विश्वनाथ के दर्शन कर गांधीजी ने भी ऐसा ही रक्तरुदन और पश्चात्ताप अपनी आत्मकथा में किया ही है। मगर हमें

लगता है कि यह सब कुछ ज्ञान के अभाव और स्वार्थ के कारण ही हो रहा है और ईश्वर जैसी सर्वव्यापक निराकार सत्ता का यथार्थ स्वरूप ज्ञान कराने से तथा मूर्तिपूजा और अवतारवाद जैसी अवैदिक मान्यताओं से लोगों को मुक्त कराने से ही ऐसी कई समस्याओं का सही निदान हो पाना सम्भव है। अविद्याजन्य बातों का इलाज विद्याप्रचार ही है। अतः सत्यार्थ प्रकाश की बातों को जन जन तक पहुंचाए जाने की महती आवश्यकता है। इससे हम सशक्त भी होंगे, स्वस्थ भी होंगे। अपने धर्म, समाज और राष्ट्र के सामने जो चुनौतियां आज हैं, उनका निदान प्रस्तुत करने में सत्यार्थ प्रकाश की वैदिक शिक्षाएं पूर्ण सक्षम हैं । मगर हमारे धर्माचार्यों, गुरुओं, योगाचार्यों (और जिन्हें आम भाषा में 'सन्तों' कहा जाता हैं) वे तो दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश और आर्य समाज का नाम सुनते ही विचलित हो उठते हैं ! उन्हें तो अपने अपने संप्रदाय की, मठ– अखाडों की, अपने अंध अनुयायियों को सुरक्षित रखने की एवं उनकी सतत संख्या–वृद्धि करने की, दान–दक्षिणाओं की, अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं की, अपने जन्मदिवस मनाने की, अपने स्वार्थ सिद्ध करने की ही पडी है। अन्यथा ऋषि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश आदि कालजयी ग्रन्थों में न केवल समस्त हिन्दुओं को बल्कि समस्त मानव समाज को ऐक्य में – सत्य, स्नेह और न्याय के सूत्रों से आबद्ध करने की वैदिक योजना पाई जाती है। इतना ही नहीं – अवैदिक–अभारतीय मत–मजहबों के विचारशील विद्वानों से विचार–विमर्श सत्रों को प्रीतिपूर्वक आयोजित कर उन्हें भी वैदिक राजमार्ग पर ले आने के यत्न किए जा सकते हैं। वेदों की सार्वभौम – सार्वजनीन शिक्षाएं ही विश्व मानव–ऐक्य की आधारशिला होने का सामर्थ्य रखती हैं।

अब ऋषि दयानन्द तो विद्यमान हैं नहीं, और न ही वही रूप में वे पुनः आने वाले हैं। जो कुछ करणीय है, वह हमारी ही निष्ठा–पुरुषार्थ की प्रतीक्षा में खड़ा है। ऋषि दयानन्द का आर्य समाज भी अपने को वैदिक आदर्शों पर स्वयं को सुप्रतिष्ठापित नहीं कर सका – जो सर्वाधिक दुर्भाग्य की बात है।

श्री तरुण विजय जी की चिन्ताएं वास्तव में हम सब की साझी चिन्ताएं हैं। उनके विचार स्वागत योग्य हैं।

– भावेश मेरजा
e-mail : bcmerja@gmail.com

'वैदिक सार्वदेशिक' पत्रिका का (29–8–2013) का अंक पढ़ने को मिला। सभा की कोषाध्य का पत्र पढ़ने से विदित होता है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ किस प्रकार से हमारे रोज के जीवन पर हावी हो रही हैं। श्रीमती इन्दू बाला जी ने बहुमूल्य तथ्यों पर प्रकाश डाला है जिसके लिए हमारी सरकार प्रचार–प्रसार माध्यम पूरी तरह से जिम्मेदार है। हमारी आने वाली पीढ़ी के भविष्य को अंधकारमय बना रही है। यह सब पैसे के लिए हो रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कमीशन देकर सरकार की नीतियाँ तय करवाती हैं। हर तरफ पैसे देकर काम करवाती हैं। यूपीए की सरकार इन नीतियों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है। आशा है सभा अधिकारी इसको रोकने के लिए कदम उठायेंगे।

– सीष कपूर, नई दिल्ली

भासस्य रूपकेषु सामाजिकता

– डॉ. चन्द्रिका लाल श्रीवास्तव

कस्यापि कालस्य समाजस्य दर्शनं तत्कालीने साहित्ये प्रत्यक्षेण प्रकारान्तरेण वा निहितं भवतीति न तिरोहितं मतिमताम्। भासस्य रूपकेष्वपि तत्कालीनस्य समाजस्य स्वरूपं द्रष्टुं शक्यते।

महाकविः भासः "चतुर्णां वर्णानां कर्तव्यम्" आलिख्य वर्णव्यवस्थायाः पोषकः प्रतीयते। तदा ब्राह्मणः पूजनीय आसीत्। तस्योल्लेखः मध्यमव्यायोगे द्रष्टुं शक्यते। यथा –

जानामि सर्वत्र सदा च नाम द्विजोत्तमाः पूज्यतमाः पृथिव्याम्। इति (मध्यमव्यायोग पृ.–1/9)

ब्राह्मणाः सर्वदा क्षत्रियवैश्यशूद्राणां वन्दनीया आसन्। संकेतोऽयं प्राप्तयते यत् तस्मिन् काले अपराधकर्ता ब्राह्मणोऽपि अवध्योऽभवत्।

यथा – **सर्वापराधे वध्यत्वमनुमुच्यतां द्विजसत्तमः। (मध्यमव्यायोग पृ.–1/34)**

क्षत्रियाः प्राणोत्सर्गं कृत्वापि ब्राह्मणानां संरक्षणम् अकुर्वन्। यथा –

क्षत्रियकुलोत्पन्नोऽहम् पूज्यतमाः खलु ब्राह्मणाः।

तस्माच्छरीरेण ब्राह्मणशरीरं विनिमातुमिच्छामि॥ (मध्यमव्यायोग पृ.–1/34)

विप्रे निर्धने सति मानवानां सम्पूर्णफलानि विनाशमुपयान्तीति मान्यताऽऽसीत्। यथा च प्राप्यत एव –

किं तद् द्रव्यं किं फलं को विशेषः क्षत्राचार्यो यत्र विप्रो दरिद्रः॥ (पंचरात्रम्–1/30)

भासस्य धारणेयं कठोपनिषद्ग्रन्थस्य मन्त्रेणानेन प्रभाविता दृश्यते –

तिस्रो रात्रीर्यदवात्सीः गृहे मे अनश्नन् ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः।

नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन् स्वस्तिमेऽस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वृणीष्व॥ (पंचरात्रम्–119)

परं तदा ब्राह्मणः वेदवेदाङ्गानाम् ज्ञाताभवत्। यस्य संकेतः प्रतिमानाटके प्राप्यते। रावणः भणति –

भोः! काश्यपगोत्रोऽस्मि। सांगोपांगवेदमधीये, मानवीयं धर्मशास्त्रम्, माहेश्वरयोगशास्त्रं बार्हस्पत्यमर्थशास्त्रं, मेधातिथेर्न्यायशास्त्रं प्राचेतसं श्राद्धकल्पं च। (प्रतिमानाटकम्–134)

क्षत्रियोऽपि स्वधर्मे निरतः परमपरागताचारविचाराणां पोषकः देशस्य रक्षकः भवतिस्म। दुर्विनीतानां विनाशाय तु क्षत्रियः स्वकीयं सर्वस्वमपि तत्याज। प्रतिमानाटके सीताहरणप्रसंगे रावणः कथयति –

बलादेव दशग्रीवः सीतामादाय गच्छति।

क्षात्रधर्मे यदि स्निग्धः कुर्याद् रामः पराक्रमम्॥ (प्रतिमानाटकम्–5/21)

पंचरात्रे एकस्मिन् प्रसंगे प्रतिपादितं यत् क्षत्रियाणां समृद्धिः तेषां बाणाधीना भवति। स एव क्षत्रियः यः स्वशस्त्रबलेन विनाशयेत् दुष्टान्। उक्तमपि –

बाणाधीना क्षत्रियाणां समृद्धिः। (पंचरात्रम्–1/24)

वैश्यशब्दोल्लेखः चारुदत्तनाटकेऽस्ति। तत्र वैश्यस्त कृते श्रेष्ठी इति शब्दोःऽयं प्रयुक्तो दृश्यते। शब्दोऽयं वैश्यस्य श्रेष्ठतायाः परिचायको वर्तते। वाणिज्यमेव वैश्यस्य प्रमुखव्यवसाय आसीत्। चारुदत्तनाटके संवाहकः आत्मपरिचयप्रसंगे कथयति –

प्रकृत्या वणिगहम्। ततो भागधेयपरिवृत्ततया दशया संवाहकवृत्तिमुपजीवामि॥ **(चारुदत्तम् पृ.–60)**

तत्र चारुदत्तः 'सार्थवाह' शब्देन व्यवह्रियते। भासस्य समये शूद्राणामपि समाजे विशिष्टं स्थानमासीत्। शूद्राः वैदिकमन्त्रैः विना देवान् प्रणमन्ति स्म। यथा – **वार्षलस्तु प्रणामः स्यादमंत्रार्चित दैवतः। (प्रतिमानाटकम्–3/6)** नहि शूद्राणां दयनीयावस्था तस्य नाटकेषु प्राप्यते। **(पंचरात्रम्.1/6)** भासस्य कतिपयेषु नाटकेषु मुख्यरूपेण ब्रह्मचर्यसंन्यासाश्रमयोः वर्णनमेव प्राप्यते। यथा – ब्रह्मचारी कथयति – **राजगृहीतोऽस्मि। श्रुतिविशेषणार्थं वत्स भूमौ लावाणकं नाम ग्रामस्तत्रोषितवानस्मि। (वासवदत्तम् पृ. 40)**

क्रमशः

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

नि:शुल्क दवा, नि:शुल्क जांच
स्वस्थ परिवार की जगी आस

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री नि:शुल्क जांच योजना

राजकीय चिकित्सा संस्थानों पर विभिन्न तरह की नि:शुल्क जांच प्रारम्भ

7 अप्रेल, 2013 से	सभी राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं उनसे सम्बद्ध अस्पतालों में **57 प्रकार की जांचें नि:शुल्क**
7 अप्रेल, 2013 से	सभी जिला चिकित्सालयों, उप–जिला चिकित्सालयों एवं सैटेलाइट चिकित्सालयों में **44 प्रकार की जांचें नि:शुल्क**
1 जुलाई, 2013 से	प्रदेश के सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर **28 प्रकार की जांचें नि:शुल्क**
15 अगस्त, 2013 से	प्रदेश के सभी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों एवं डिस्पेंसरीज पर **15 प्रकार की जांचें नि:शुल्क**

सभी राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं सम्बद्ध अस्पतालों, जिला, उप–जिला तथा सैटेलाइट चिकित्सालयों में 44 तरह की नि:शुल्क जांच सुविधाएं

Clinical Pathology :
- Hemoglobin Estimation (Hb)
- Total Leukocyte Count (TLC)
- Differential Leukocyte Count (DLC)
- MP (Slide Method)
- ESR
- Bleeding Time (BT)
- Clotting Time (CT)
- PBF
- CBC
- Blood Group (ABO-RH typing)
- Total Eosinophil Count (TEC)

Bio Chemistry
- Blood Sugar
- Blood Urea
- S. Creatinine
- S. Bilirubin (T)
- S. Bilirubin (D)
- SGOT
- SGPT
- S. Alkaline Phosphatase
- S. Total Protein
- S. Albumin
- S. Calcium
- S. CK-NAC
- S. CK-MB
- S. LDH
- S. Amylase
- S. Uric Acid

Microbiology
- S. CRP
- VDRL Rapid Test
- HIV Rapid Test
- Sputum for AFB
- Widal Slide Test
- Dengue (Rapid) Test
- Malaria by Card Test
- Rheumatoid Factor (RF)
- ASLO
- HBsAg (Rapid) test

Urine Analysis
- Urine Complete Exam
- Urine Pregnance Test
- Urine Microscopy

Stool Analysis
- Stool for Ova and cyst

Cardiology
- ECG

Radiology
- X-Ray
- Sonography

राजकीय मेडिकल कॉलेज एवं सम्बद्ध अस्पतालों में 13 अन्य जांचें

Bio Chemistry
- S. Triglyceride
- S. Electrolyte
- S. VLDL
- S. Total Cholesterol
- S. Lipase
- S. HDL
- S. GGT
- S. Phosphorous
- CSF Protein Chloride & Sugar

Clinical Pathology
- Prothrombin time test INR
- Pleural fluid cell count
- Ascitic fluid cell count

Microbiology
- Gram staining

मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा योजना

समस्त राजकीय चिकित्सा संस्थानों में बी.पी.एल. के साथ–साथ अन्य सभी मरीजों को सर्वाधिक उपयोग में आने वाली आवश्यक दवाइयां निःशुल्क उपलब्ध। योजना के सुचारु संचालन हेतु 300 करोड़ रुपये वार्षिक का प्रावधान, योजना के प्रथम वर्ष में 7 करोड़ 63 लाख मरीज लाभान्वित।

निःशुल्क दवा योजना इन सबके लिए :

- राजकीय अस्पताल में अपने उपचार के लिए आने वाले समस्त आउटडोर मरीज
- राजकीय अस्पताल में भर्ती होने वाले इनडोर मरीज
- थैलेसीमिया और हिमोफिलिया से पीड़ित मरीज
- समस्त राजकीय अधिकारी, कर्मचारी एवं सेवानिवृत्त राज्यकर्मी
- सेवानिवृत्त राज्य कर्मचारियों के लिए डायरी व्यवस्था पूर्ववत जारी रहेगी
- निम्न को पूर्व की भांति ''मुख्यमंत्री जीवन रक्षा कोष'' के अन्तर्गत लाभ मिलता रहेगा :– बीपीएल/स्टेट बीपीएल, आस्था कार्डधारी, एच.आई.वी. (एड्स), वृद्धावस्था, विकलांग व विधवा पेंशनधारी, जोधपुर शहर की चार नट एवं सांसी बस्तियां, अन्त्योदय अन्न योजना (बारां जिले के एपीएल सहरिया परिवार), अन्नपूर्णा योजना, कथोड़ी जनजाति के समस्त परिवार, मेहरानगढ़ दुर्ग जोधपुर दुःखान्तिका के पीड़ित परिवार, बीपीएल एवं स्टेट बीपीएल परिवार के निःसन्तान दम्पत्ति सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित व अनुमोदित अनाथालय के बच्चे, शारीरिक व मानसिक विमंदित बच्चे एवं विभाग द्वारा संचालित/ अनुमोदित नारी निकेतन में निवासरत महिलाएं।

मुख्यमंत्री नि:शुल्क दवा योजनान्तर्गत मेडिकल कॉलेजों से सम्बन्धित अस्पतालों में 425 से अधिक दवाइयां एवं सर्जिकल्स सूचर्स व सर्जिकल आइटम, जिला स्तर के अस्पतालों में 350 से 375 दवाइयां, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में लगभग 125 दवाइयां तथा उप–स्वास्थ्य केन्द्रों पर लगभग 15 दवाइयां 16 हजार 907 वितरण केन्द्रों के माध्यम से नि:शुल्क उपलब्ध करवाई जा रही हैं।

राजस्थान संवाद / जेपीसी

आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, राजस्थान सरकार का संकल्प

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान सरकार

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।